संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 330
पृष्ठ 8
शुक्रवार
21 अगस्त 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- पॉजिविटी भी बदल जाएगी...

विचार- चीन का आइस सिल्क रोड...

खेल- सचिन तेंदुलकर से बेहतर विराट...

सर्वोदय विद्यालयों के संचालन में व्यापक बदलाव की जरूरत : मुख्यमंत्री योगी

लखनऊ,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालयों में सुव्यवस्थित संचालन के लिए व्यापक बदलाव की जरूरत बताई है। विद्यालयों से जुड़ी नियमावली तैयार करने, शिक्षकों के रिक्त पदों पर चयन की प्रक्रिया आगे बढ़ाने तथा एक सोसाइटी के गठन की दिशा में आवश्यक कार्रवाई की जाए ताकि आवासीय विद्यालयों का प्रबंधन और संचालन अधिक व्यवस्थित ढंग से हो सके। गुरुवार को मंत्री समाज कल्याण असीम अरुण की उपस्थिति में विभाग की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने विद्यालयों में शिक्षकों और अन्य आवश्यक स्टाफ की उपलब्धता, विद्यार्थियों को मिल रही सुविधाओं तथा प्रबंधन व्यवस्था की जानकारी ली। बैठक में बताया गया कि वर्ष 2017 से पहले प्रदेश में 93 जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय संचालित थे, जबकि वर्ष 2025–26 तक इनकी संख्या बढ़कर 103 हो गई है। इनमें 59 विद्यालय सीबीएसई तथा 44 विद्यालय यूपी बोर्ड से संबद्ध हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने की प्रक्रिया में तेजी लाई जाए। साथ ही विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप अन्य आवश्यक मानव संसाधन की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। वृद्धावस्था पेंशन के लिए पात्र किंतु अब तक वंचित वृद्धजनों के आवेदनों का सत्यापन कराते हुए पेंशन से लाभान्वित कराया जाए। उन्होंने कहा कि पात्र वृद्धजनों को अनावश्यक रूप से प्रतीक्षा न करनी पड़े और आवेदन के सत्यापन से लेकर पेंशन स्वीकृति तक की प्रक्रिया समयबद्ध हो। बैठक में बताया गया कि राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना के अंतर्गत वर्ष 2017–18 में 37.47 लाख लाभार्थियों की संख्या बढ़कर वर्ष 2025–26 में 67.50 लाख हो गई है। वर्तमान में लगभग 11.50 लाख नए आवेदन लंबित हैं। मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना की समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण मार्गदर्शन उपलब्ध कराने और योजना की पहुंच तथा प्रभावशीलता को और बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग करने तथा श्रेष्ठ शिक्षकों और विशेषज्ञों के अनुभव का अधिक से अधिक विद्यार्थियों को लाभ दिलाने के निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि योजना प्रदेश के सभी 75 जनपदों में 163 केंद्रों के माध्यम से संचालित है। इन केंद्रों पर 1,783 इम्पैनल्ड शिक्षक हैं तथा यूपीएससी, पीसीएस, नीट, जेईई, एनडीए सीडीएस सहित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए 23,801 विद्यार्थी पंजीकृत हैं। योजना के अंतर्गत चार सेंटर ऑफ एक्सीलेंस संचालित हैं।छात्रवृत्ति वितरण की अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि छात्रवृत्ति का लाभ प्रत्येक पात्र विद्यार्थी को समय से मिलना चाहिए। पूर्वदशम और दशमोत्तर छात्रवृत्ति से वंचित विद्यार्थियों के लिए आवेदन पोर्टल तत्काल खोला जाए और हर हाल में 2 अक्टूबर तक छात्रवृत्ति की धनराशि अंतरित कर दी जाए।

भारत किसी भी सहायता, राहत या सहयोग के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध : राजनाथ सिंह

नई दिल्ली,एजेंसी। भारत और जापान ने हिंद–प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए अपने रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग को और मजबूत करने पर जोर दिया है। नई दिल्ली में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और जापान के रक्षा मंत्री शिंजिरो कोइजुमी के बीच गुरुवार को इस संबंध में एक महत्वपूर्ण द्विपक्षीय बैठक हुई। यहां दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों ने रक्षा सहयोग को व्यापक बनाने, समुद्री सुरक्षा साझेदारी को गहरा करने तथा रक्षा उपकरण एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग आगे बढ़ाने पर चर्चा की। यह वार्ता ऐसे समय हो रही है जब दोनों देश हिंद–प्रशांत क्षेत्र में नियम आधारित व्यवस्था, समुद्री मार्गों की सुरक्षा और स्वतंत्र एवं निर्बाध वैध व्यापार को महत्वपूर्ण मानते हैं। साथ ही इस क्षेत्र में चीन लगातार अपनी मौजूदगी बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। बैठक की शुरुआत में राजनाथ सिंह ने जापानी रक्षा मंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि भारत इस कठिन समय में आवश्यक किसी भी सहायता, राहत या सहयोग के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि भारत–जापान संबंध साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, परस्पर सम्मान और लंबे समय से चले आ रहे सभ्यतागत संबंधों पर आधारित हैं। दोनों देश अगले वर्ष राजनयिक संबंधों की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ मनाएंगे। राजनाथ सिंह ने कहा कि पिछले वर्षों में भारत और जापान की मित्रता दोनों देशों के साथ–साथ व्यापक हिंद–प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता, लचीलापन और नियम आधारित व्यवस्था की महत्वपूर्ण आधारशिला बन गई है। एशिया के दो प्रमुख लोकतंत्रों के रूप में भारत और जापान की जिम्मेदारी है कि वे क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

हमारे लिए वंदे मातरम् भावनात्मक विषय, भाजपा के लोग नकली राष्ट्रवादी : कांग्रेस

नयी दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस ने बृहस्पतिवार को श्वंदे मातरम्श को लेकर गृह मंत्री अमित शाह द्वारा निशाना साधे जाने के बाद पलटवार करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) छात्रों तथा राम मंदिर से कथित चंदा चोरी जैसे विषयों से ध्यान भटकाने के लिए राष्ट्र गीत को लेकर विवाद खड़े करना चाहती है, जबकि उसके (भाजपा के) लोग झूठे और नकली राष्ट्रवादी हैं। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि वह ट्राइड (परखे जा चुके) और टायर्ड (थक चुके) हैं तथा अब उन्हें जल्द ही रिटायर हो जाना चाहिए। रमेश ने दावा किया कि प्रधानमंत्री मोदी, गृह मंत्री शाह और भाजपा छात्रों के मुद्दे और राम मंदिर से चंदा चोरी तथा आस्था के साथ धोखा जैसे मुद्दों से ध्यान भटकाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन कांग्रेस उनके जाल में फंसने वाली नहीं है। कांग्रेस महासचिव ने कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) द्वारा 1937 में वंदे मातरम् के संदर्भ में पारित प्रस्ताव का उल्लेख करते हुए कहा कि मुख्य विपक्षी दल उस वक्त सर्वोच्च नेताओं द्वारा किए गए फैसले का पालन करने के लिए वचनबद्ध है। उनका कहना था, वंदे मातरम् पर महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, आचार्य नरेन्द्र देव और उस समय के कुछ अन्य प्रमुख नेताओं द्वारा फैसला किया गया था। यह निर्णय रवींद्रनाथ टैगोर की सलाह पर हुआ था। उनके मुताबिक, वंदे मातरम् के सिर्फ दो अंतरे गाने के निर्णय का 90 साल पुराना इतिहास है तथा नेहरू, मोराजी देसाई, इंदिरा गांधी, चंद्रशेखर, वी पी सिंह, एचडी देवगौड़ा और अटल बिहारी वाजपेयी ने भी दो ही अंतरे गाए थे। रमेश ने इस बात पर जोर दिया, वंदे मातरम् हमारे के लिए कोई राजनीतिक नहीं, बल्कि भावनात्मक मुद्दा है।

एसएफआई-एबीवीपी कार्यकर्ताओं के बीच झड़प, कैंपस में तनाव, कई छात्र अस्पताल में भर्ती

कोलकाता,एजेंसी। दक्षिण कोलकाता स्थित जादवपुर विश्वविद्यालय (जेयू) परिसर में बुधवार और गुरुवार की दरमियानी रात स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के कार्यकर्ताओं के बीच हुई झड़प के बाद तनाव की स्थिति पैदा हो गई। झगड़े की वजह फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी स्टूडेंट्स यूनियन यानी एफईटीएसयू की जनरल बॉडी मीटिंग बनी। एसएफआई का दावा है कि पश्चिम बंगाल में नई राज्य सरकार बनने के बाद से एबीवीपी विश्वविद्यालय पर कब्जा करने की कोशिश कर रहा है। एसएफआई ने आरोप लगाया कि एबीवीपी ने बाहर के लोगों को कैंपस में बुलाया और तोड़फोड़ की। वहीं एबीवीपी का कहना है कि एसएफआई ने समाजवादी एकता केंद्र भारत–कम्युनिस्ट से जुड़े डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन (डीएसओ) के कार्यकर्ताओं की मदद से जनरल बॉडी मीटिंग की आड़ में एबीवीपी के पदाधिकारियों पर हमला किया। झड़प में घायल हुए कुछ छात्रों का इलाज केपीसी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में चल रहा है। गुरुवार सुबह जादवपुर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा विधायक और अभिनेत्री से नेता बनीं सरबोरी मुखर्जी अस्पताल पहुंचीं और भर्ती छात्रों का हेल्थ अपडेट ली। घटना को लेकर दोनों प्रतिद्वंद्वी समूहों ने जादवपुर थाने में एक–दूसरे के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। साथ ही दोनों छात्र संगठनों ने गुरुवार को कैंपस के अंदर बड़े विरोध प्रदर्शन का ऐलान भी किया है। खबर लिखे जाने तक बुधवार रात हुई इस झड़प के सिलसिले में किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई थी। एबीवीपी की केंद्रीय कार्य समिति के सदस्य सुभाब्रत अधिकारी ने कहा कि उनके पदाधिकारियों पर हमला सिर्फ एसएफआई कार्यकर्ताओं ने नहीं किया, बल्कि अन्य वामपंथी छात्र समूहों के छात्र भी इसमें शामिल थे। दूसरी ओर एसएफआई के महासचिव सृजन भट्टाचार्य ने कहा कि इस पूरे झगड़े में एसएफआई कहीं नहीं थी।

वंदे मातरम विवाद : गृह मंत्री शाह का कांग्रेस पर बड़ा हमला

कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति

चेंगलपट्टू(तमिलनाडु),एजेंसी। वंदे मातरम को लेकर कांग्रेस कार्य समिति के प्रस्ताव पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने निशाना साधा। उन्होंने कहा, कल कांग्रेस कार्य समिति ने राष्ट्र–विरोधी फैसला लिया। कांग्रेस ने अपने 1937 के प्रस्ताव के अनुसार वंदे मातरम के केवल दो छंद गाने का फैसला किया है। उन्होंने कहा, मैं देश को याद दिलाना चाहता हूं कि 1937 में मुसलमानों को खुश करने के लिए वंदे मातरम को बांटकर कांग्रेस ने देश के बंटवारे की नींव रखी थी। अमित शाह ने कहा, आज नरेंद्र मोदी सरकार ने राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए कांग्रेस की इस गलती को सुधार दिया है और इसे कानूनी आधार भी दिया है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस का यह फैसला उसकी तुष्टीकरण की नीति को साफ दिखाता है। उन्होंने कहा, कांग्रेस ने न केवल बंकिम (चंद्र चटर्जी) बाबू की इस रचना का अपमान किया है, बल्कि उन लाखों लोगों का भी अपमान किया है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी।

अमित शाह ने कहा, आज कांग्रेस पार्टी अपने 1937 के प्रस्ताव को लागू कर रही है, लेकिन संसद की ओर से बनाए गए कानून को खारिज कर रही है। उन्होंने कहा, मुझे हैरानी हो रही है कि (लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष) राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी एक बार फिर तुष्टीकरण की राजनीति को आगे बढ़ा रही है। अमित शाह ने कहा, देश ने एक बार वंदे मातरम को दो हिस्सों में बांटने की गलती की थी और हमें इसके नतीजे भुगतने पड़े हैं।

उन्होंने कहा, अब देश को कांग्रेस पार्टी के इस फैसले के खिलाफ एकजुट होना चाहिए और कहना चाहिए कि उसकी तुष्टीकरण की राजनीति अब और नहीं चलेगी। अमित शाह ने कहा कि भाजपा कांग्रेस पार्टी के इस फैसले की निंदा करती है। वहीं, विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) ने भी इस मुद्दे पर कांग्रेस पर हमला बोला है। वीएचपी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस विदेशी सोच से चलती है और तुष्टिकरण के बिना टिक नहीं सकती। वीएचपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट किया। इसमें उन्होंने कांग्रेस के फैसले पर सवाल उठाया। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने बाकी चार छंद न गाने का फैसला इसलिए किया है, क्योंकि उनमें ऐसे शब्द हैं, जो भारतीय मूल्यों, प्राचीन संस्कृति, परंपराओं और राष्ट्रीय भावना से गहराई से जुड़े हैं।

उन्होंने कहा, बाकी हिस्से में धर्म, मर्मन, शक्ति, भक्ति, मंदिर, वाणी, ज्ञान और दुर्गा जैसे शब्द हैं। ये भारतीय मूल्यों, संस्कृति, प्राचीन परंपराओं, आस्था, विश्वास और राष्ट्रीय भावना से गहराई से जुड़े हैं।

बंसल ने आरोप लगाया कि कांग्रेस की राजनीतिक सोच भारत की सांस्कृतिक और सभ्यतागत पहचान से मेल नहीं खाती।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला–अवैध लिंग जांच में पुलिस नहीं दर्ज कर सकती एफआईआर

नई दिल्ली,एजेंसी। पीसीपीएनडीटी कानून के तहत दर्ज अपराधों की जांच पुलिस नहीं कर सकती। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को यह अहम फैसला सुनाया। अदालत ने साफ–साफ कहा कि ऐसे मामलों में कार्रवाई कानून के तहत नामित अधिकारियों को ही करनी होगी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इस कानून से जुड़े मामले तकनीकी होते हैं। इनमें चिकित्सकीय जानकारी और संवेदनशीलता की जरूरत पड़ सकती है। ऐसे में पुलिस को इस कानून के तहत जांचकर्ता की भूमिका नहीं दी जा सकती। न्यायमूर्ति संजय करोल और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कहा कि गर्भधारण पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (लिंग चयन प्रतिषेध) अधिनियम (पीसीपीएनडीटी) कानून के तहत मामलों की जांच के लिए विशेष समझ की जरूरत होती है। पीठ ने कहा, इस कानून के उद्देश्यों के लिए पुलिस जांचकर्ता नहीं है। हालांकि, अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि कानून के प्रावधानों के अनुसार पुलिस सहायक भूमिका निभा सकती है। पीसीपीएनडीटी कानून गर्भ में पल रहे भ्रूण का लिंग पता लगाने के लिए जन्म से पहले की निदान तकनीकों के इस्तेमाल पर रोक लगाने के उद्देश्य से बनाया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर भी स्थिति साफ कर दी। शीर्ष अदालत ने कहा कि पुलिस की जांच पर रोक केवल पीसीपीएनडीटी कानून के तहत आने वाले अपराधों तक सीमित है। अगर किसी मामले में सामान्य आपराधिक कानून के तहत कोई अलग अपराध सामने आता है, तो पुलिस उसकी जांच कर सकती है और अभियोजन भी चला सकती है। यानी शीर्ष अदालत के फैसले से पुलिस की दूसरी कानूनी शक्तियों पर कोई रोक नहीं लगाई गई है। शीर्ष अदालत का यह फैसला उस मामले में आया, जिसमें यह सवाल उठाया गया था कि क्या पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर सकती है और गर्भधारण पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (लिंग चयन प्रतिषेध) अधिनियम, 1994 के तहत अपराधों की जांच कर सकती है? सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि ऐसे मामलों में कानून के तहत तय नामित अधिकारियों को कार्रवाई करनी होगी।

मंत्रियों के बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ना चाहिए–अभिजीत दीपके

मुंबई,एजेंसी। कॉकरोच जनता पार्टी के संयोजक अभिजीत दीपके ने गुरुवार को महाराष्ट्र के स्कूल शिक्षा मंत्री दादा भुसे के इस्तीफे की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य के सरकारी स्कूल बेहद दयनीय स्थिति में हैं और कई जगह छात्रों को बुनियादी सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं हैं। दीपके ने कहा कि जिन स्कूलों में बच्चे पढ़ रहे हैं, वहां की स्थिति देखकर ऐसा लगता है कि मंत्रियों के कुत्तों को भी इन छात्रों से बेहतर सुविधाएं मिलती हैं। दीपके के नेतृत्व में उनके संगठन ने पिछले सप्ताह 'स्कूल ठीक करो' अभियान शुरू किया था। इसी अभियान के तहत उन्होंने लातूर जिले की औसा तहसील के उजनी गांव स्थित जिला परिषद स्कूल का दौरा किया। निरीक्षण के बाद पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि स्कूलों की बदहाली के लिए निर्वाचित जनप्रतिनिधियों और मंत्रियों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य के कई सरकारी स्कूल आज भी उचित कक्षाओं, बेंच, शौचालय और सुरक्षित संपर्क सड़कों जैसी बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। दीपके ने आरोप लगाया कि कुछ स्कूलों में छात्रों के साथ जानवरों से भी बदतर व्यवहार जैसी स्थिति बनी हुई है। उन्होंने कहा, श्यह छात्रों की जिंदगी का सवाल है। जब राजनीतिक नेता छात्रों के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं तो लोग उन्हें वोट क्यों दें? क्या लोग उन्हें सिर्फ इसलिए वोट देते हैं कि वे हेलीकॉप्टर में यात्रा कर सकें? लोगों को देखना चाहिए कि उनके बच्चे किन परिस्थितियों में पढ़ रहे हैं।

आरएसएस पर राहुल गांधी का हमला:

कोई कैसे जान सकता है 1.5 अरब लोगों की सच्चाई ?

नई दिल्ली,एजेंसी। दिल्ली में 'हरा भरा स्वराज' राजीव गांधी के विजन को श्रद्धांजलि' कार्यक्रम में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने आरएसएस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि किसी एक समूह या व्यक्ति को यह मानने का अधिकार नहीं है कि वह देश की 1.5 अरब आबादी की सच्चाई जानता है। राहुल गांधी ने कहा श्यही आरएसएस के साथ मेरी समस्या है। आरएसएस ने तय कर लिया है कि वह 1.5 अरब लोगों की सच्चाई जानता है। मैं कहता हूं कि केवल 1.5 अरब लोग ही अपनी सच्चाई जान सकते हैं।श उन्होंने कहा कि अगर वह यह मान लें कि वह किसी दूसरे व्यक्ति की सच्चाई जानते हैं तो यह गलत होगा, क्योंकि उन्होंने उस व्यक्ति के अनुभवों और परिस्थितियों को नहीं देखा है। राहुल गांधी ने कहा कि आज देश में वैचारिक लड़ाई सिर्फ पर्यावरण, राजनीति या स्वतंत्र मीडिया जैसे मुद्दों तक सीमित नहीं है। उनके मुताबिक, असली सवाल यह है कि क्या कोई समूह यह तय कर सकता है कि देश के हर व्यक्ति की सच्चाई वही जानता है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के छात्रों से जुड़े एक बयान का जिक्र करते हुए कहा कि इसका मतलब यह संदेश देना है कि मैं सब कुछ जानता हूं, आप कुछ नहीं जानते। राहुल गांधी ने कहा कि जब छात्रों ने विरोध किया तो मोहन भागवत की ओर से भी छात्रों पर हमला नहीं करने की बात कही गई, लेकिन उनके अनुसार छात्रों पर लगातार हमला इसलिए हो रहा है क्योंकि कुछ लोग मानते हैं कि वे उनकी सच्चाई जानते हैं।

राहुल गांधी ने कहा कि अगर देश के हर कारोबार का मालिक एक ही व्यक्ति हो तो बड़ी आबादी के लिए स्वराज संभव नहीं है। उन्होंने कहा अगर एक व्यक्ति इस देश के हर एक कारोबार का मालिक है तो भारतीय लोगों की बड़ी आबादी के लिए स्वराज की कोई संभावना नहीं है। राहुल गांधी ने कहा कि देश में कुछ लोगों के पास एयरपोर्ट, बंदरगाह और कंपनियां होनी चाहिए, जबकि दूसरे लोग ऐसे नौकरशाह होने चाहिए जो अपनी बात स्वतंत्र रूप से रख सकें और किसी कारोबारी के प्रभाव में आकर काम करने के लिए मजबूर न हों। राहुल गांधी ने कहा कि गांधीजी का विजन कुछ बुनियादी व्यवस्थाओं के बिना पूरा नहीं हो सकता। उन्होंने महंगी शिक्षा व्यवस्था और असमान परीक्षा प्रणाली पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि यह विजन ऐसी वित्तीय व्यवस्था के साथ भी संभव नहीं है, जिस पर दो–तीन लोगों का एकाधिकार हो। राहुल गांधी ने राजनीतिक व्यवस्था की पहुंच गांवों और पंचायतों तक होने की जरूरत बताई। उन्होंने पंचायती राज, विधायक और सांसदों का भी उल्लेख किया। राहुल गांधी ने भाजपा और आरएसएस पर समाज के अलग–अलग वर्गों को लेकर निशाना साधा।

प्रयागराज में मर्डर: हनुमानगंज में दिन दहाड़े महिला की चाकू से गला रेतकर हत्या

प्रयागराज। सरायइनायत थाना क्षेत्र के हनुमानगंज बाजार कोटवा रोड जैतपुर गांव में बृहस्पतिवार को एक महिला की चाकू से गला रेत कर हत्या कर दी गई। महिला कुछ दिन पहले मुंबई से पति और एक बच्ची के साथ किराए के मकान में रह रही थी।

सरायइनायत थाना क्षेत्र के हनुमानगंज बाजार कोटवा रोड जैतपुर गांव में बृहस्पतिवार को एक महिला की चाकू से गला रेत कर हत्या कर दी गई। महिला कुछ दिन पहले मुंबई से पति और एक बच्ची के साथ किराए के मकान में रह रही थी। घटना के समय महिला का पति उतरांव स्थित अपने घर गया हुआ था। सूचना पर इलाकाई पुलिस फोरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंची। फॉरेंसिक टीम घटना स्थल से साक्ष्य इकट्ठा किया है। उतरांव थाना क्षेत्र के बासगित गांव निवासी दिनेश कुमार मुंबई में ऑटो रिक्शा चलाता है। दिनेश ने पांच साल पहले मुंबई में ऊषा के साथ प्रेम विवाह किया था। पिछले 11 अगस्त को दिनेश पत्नी एवं चार साल की बच्ची के साथ सरायइनायत थाना क्षेत्र हनुमानगंज बाजार के कोटवा रोड जैतपुर गांव में अनिल सोनी के मकान के प्रथम तल पर किराए पर रह रहा था। महिला के पति दिनेश के अनुसार वह बुधवार को दोपहर गांव गया था। इस बीच बृहस्पतिवार को सुबह ऊषा की किसी नेथर्माकोल काटने वाले चाकू से गला रेत कर हत्या कर दी। कुछ देर बाद उसकी पुत्री स्वीटी की रोने की आवाज सुनकर मकान मालिक कमरे में देखा तो उषा का खून से लथपथ शव जमीन पर पड़ा था।

सूचना पर डीसीपी गंगानगर कुलदीप सिंह गुनावत, एसीपी थरवई अजेंद्र यादव, प्रभारी निरीक्षक प्रवीण कुमार गौतम फोरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंचे। फोरेंसिक टीम ने घटना स्थल से साक्ष्य इकट्ठा किया। मकान मालिक की दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में एक संदिग्ध यूवी आते जाते दिखा है जिसे पुलिस ने हिरासत में लिया है। डीसीपी गंगानगर कुलदीप सिंह गुनावत ने बताया कि महिला की चाकू से गला रेतकर हत्या की गई है। पुलिस घटना की जांच कर रही है।

ऑनलाइन गेम की आड़ में 18 शहरों में सट्टेबाजी के नेटवर्क होने के संकेत

प्रयागराज। ऑनलाइन गेम की आड़ में सट्टेबाजी कराने वाले गिरोह के 18 शहरों में नेटवर्क होने के संकेत मिले हैं। मेजा के मिश्रपुर में मुर्गी फार्म से कथित तौर पर चलाए जा रहे सट्टेबाजी के अड्डे पर कार्रवाई के बाद एसटीएफ की जांच जैसे–जैसे बढ़ रही है, नेटवर्क का दायरा भी सामने आ रहा है। ऑनलाइन गेम की आड़ में सट्टेबाजी कराने वाले गिरोह के 18 शहरों में नेटवर्क होने के संकेत मिले हैं। मेजा के मिश्रपुर में मुर्गी फार्म से कथित तौर पर चलाए जा रहे सट्टेबाजी के अड्डे पर कार्रवाई के बाद एसटीएफ की जांच जैसे–जैसे बढ़ रही है, नेटवर्क का दायरा भी सामने आ रहा है। गिरफ्तार चार आरोपियों से पूछताछ और उनके मोबाइल फोन में मिली व्हाट्सएप चौट के आधार पर वाराणसी, जौनपुर, आजमगढ़, गाजीपुर, मेरठ, गाजियाबाद, बरेली, लखनऊ, कानपुर और फतेहपुर समेत करीब 18 शहरों में इससे जुड़े लोगों के सक्रिय होने के सुराग मिले हैं। एसटीएफ ने पिछले हफ्ते मेजा से बृजेश, प्रिंस, अभिषेक और मितेश को गिरफ्तार किया था। चौट में मिले मोबाइल नंबरों और अन्य डिजिटल साक्ष्यों के आधार पर एसटीएफ संभावित आरोपियों की पहचान कर रही है। एसटीएफ के मुताबिक, टीम बैंक खातों और यूपीआई से जुड़े रिकॉर्ड भी खंगाल रही है। अफसरों का कहना है कि मुख्य सरगना तक पहुंचने के लिए टीमें दबिश दे रही हैं। नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों के नाम भी सामने आ सकते हैं।

रेलवे : दशहरा, दिवाली और छठ पूजा की राह आसान करेगी दादरी स्पेशल

प्रयागराज। प्रयागराज जंक्शन से नोएडा के निकट दादरी स्टेशन के लिए चलाई जा रही स्पेशल ट्रेन के फेरे बढ़ा दिए गए हैं। अब संचालन 31 अगस्त नहीं, 30 नवंबर तक होगा। प्रयागराज जंक्शन से नोएडा के निकट दादरी स्टेशन के लिए चलाई जा रही स्पेशल ट्रेन के फेरे बढ़ा दिए गए हैं। अब संचालन 31 अगस्त नहीं, 30 नवंबर तक होगा। इसका फायदा यह होगा कि दुर्गापूजा, दशहरा, दिवाली व छठ पूजा पर प्रयागराज से नोएडा आने और वहां जाने वाले यात्रियों को बड़ी सहूलियत मिलेगी। उत्तर मध्य रेलवे के सीपीआरओ डॉ.शिवम शर्मा ने बताया कि 02417 प्रयागराज–दादरी स्पेशल एक सितंबर से 30 नवंबर तक व 02418 दादरी–प्रयागराज का संचालन दो सितंबर से एक दिसंबर तक होगा। 21 कोच की इस ट्रेन में स्लीपर के 10, एसी थ्री के तीन, सामान्य श्रेणी के पांच व एसएलआर श्रेणी के दो कोच रहेंगे।

झूंसी में प्रसूता की मौत, शव रखकर परिजनों ने अस्पताल में किया तोड़फोड

प्रयागराज। झूंसी थाना क्षेत्र के दुर्जनपुर गांव स्थित एक निजी अस्पताल में बुधवार देर शाम डिलीवरी के बाद 21 वर्षीय प्रसूता वंदना भारतीय पत्नी नागेंद्र भारतीय निवासी कटका की मौत हो गई। इसके बाद परिजनों ने शव को अस्पताल में रखकर हंगामा कर दिया। झूंसी थाना क्षेत्र के दुर्जनपुर गांव स्थित एक निजी अस्पताल में बुधवार देर शाम डिलीवरी के बाद 21 वर्षीय प्रसूता वंदना भारतीय पत्नी नागेंद्र भारतीय निवासी कटका की मौत हो गई। इसके बाद परिजनों ने शव को अस्पताल में रखकर हंगामा कर दिया। इस दौरान अस्पताल में तोड़फोड़ की गई। बवाल बढ़ता देख डॉक्टर और कर्मचारी मौके से भाग निकले। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। थाना क्षेत्र के कटका गांव निवासी नागेंद्र भारतीय की पत्नी वंदना गर्भवती थी। बुधवार की सुबह करीब सात बजे प्रसव पीड़ा होने पर परिजनों ने उसे दुर्जनपुर गांव स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। पति नागेंद्र भारतीय ने बताया कि दोपहर करीब बारह बजे डॉक्टरों ने बताया कि ऑपरेशन के माध्यम से डिलीवरी कराई जाएगी। परिजनों की सहमति से चिकित्सकों ने आपरेशन किया तो पीड़िता को बेटा पैदा हुआ। इसी बीच शाम तकरीबन छह बजे अचानक महिला की हालत बिगड़ने लगी। परिजनों ने अस्पताल के चिकित्सक को मौके पर बुलाया। अभी उपचार ठीक से शुरू होता कि वंदना की मौत हो गई। इससे परिजनों ने हंगामा शुरू कर दिया। माहौल बिगड़ता देख चिकित्सक और अन्य कर्मचारी मौके से फरार हो गए। परिजनों ने आरोप लगाया कि इलाज में लापरवाही के कारण पीड़िता की मौत हुई। घटना की जानकारी पर पुलिस मौके पर पहुंची और महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। एसओ झूंसी महेश मिश्र ने बताया कि महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। परिजनों की तहरीर पर विधिक कार्रवाई की जा रही है।

प्रयागराज: महापौर, डीएम, नगर आयुक्त और पीडीए वीसी जल निकासी में जुटे, हाईकोर्ट की सख्ती पर जागे अफसर

प्रयागराज। प्रयागराज में भारी बारिश के बाद वीआईपी और वीवीआईपी इलाकों में जलभराव को लेकर हाईकोर्ट ने सख्त रुख अपनाया। कोर्ट के निर्देश के बाद प्रशासनिक अमला हरकत में आया और जार्जटाउन, सिविल लाइंस, कटरा, सोहबतियाबाग, अलोपीबाग व रामबाग समेत कई इलाकों में पंप लगाकर पानी की निकासी कराई गई।

प्रयागराज में भारी बारिश के बाद शहर के वीआईपी और वीवीआईपी इलाकों में स्थित कॉलोनियों और घरों में पानी भरने पर हाईकोर्ट ने सख्त रुख अख्तियार कर लिया। बुधवार को जलभराव पर हाईकोर्ट में सुनवाई हुई और कोर्ट ने अधिकारियों को अविलंब जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश देते हुए बृहस्पतिवार को फिर उपस्थित होकर स्थित से अवगत कराने का निर्देश दिया।

इसके बाद जार्जटाउन, सिविल लाइंस, कटरा, सोहबतियाबाग, अलोपीबाग, रामबाग समेत कई स्थानों महापौर गणेश केरसवानी, जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा, नगर आयुक्त सीलम साईं तेजा और पीडीए वीसी ऋषिराज ने निरीक्षण किया। जगह–जगह पंप लगाकर पानी की निकासी कराने की व्यवस्था कराई गई। हाईकोर्ट के एक जज के आवास के बाहर गली में पानी भर जाने के बाद अधिकारियों के हाथ पांव फूल गए। वहां पर जल निकासी कराने के बाद सफाई कराई गई और फिर चूने के छिड़काव किया गया। बृहस्पतिवार को स्थिति को नियंत्रण में किया गया।

प्रयागराज में बारिश के दौरान जलभराव से नगरवासियों को गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कारण चाहे जो भी हो, जनहित में इसका स्थायी समाधान सर्वोच्च प्राथमिकता पर सुनिश्चित किया जाए। समय रहते आवश्यक कदम उठाए गए होते तो आज यह स्थिति उत्पन्न नहीं होती। जिला प्रशासन और संबंधित विभाग तत्काल प्रभावी कार्रवाई करें तथा भविष्य में ऐसे संकट की पुनरावृत्ति रोकने के ठोस उपाय सुनिश्चित करें।

पानी में डूबी रहीं रेल पटरियां, स्टेशन मैनेजर कक्ष में भी भरा पानी

जलभराव की वजह से बुधवार को रामबाग रेलवे स्टेशन परिसर पानी में डूब गया। पटरियों पर पानी भरने से प्लेटफॉर्म–एक से चार तक ट्रेनों का संचालन ठप हो गया है। इससे रेल यात्रियों की मुश्किलें हुईं। रेलवे प्रशासन ने यहां से चलने वाली विभूति छोड़ अन्य सभी ट्रेनें झूंसी स्टेशन पर शिफ्ट कर दी हैं।

स्टेशन मास्टर, आरपीएफ कार्यालय और स्टेशन मैनेजर कक्ष में भी पानी भर गया। पानी निकालने के लिए रेलवे प्रशासन ने पंप लगाए लेकिन स्टेशन परिसर के जलभराव से पानी नहीं निकल सका।

स्थिति का जायजा लेने के लिए वाराणसी के डीआरएम आशीष जैन बुधवार को रामबाग स्टेशन पहुंचे। रिटायरिंग रूम के कर्मचारियों को सुरक्षित स्थान पर शिफ्ट करना पड़ा। पूर्वोत्तर रेलवे के सीपीआरओ सुमित कुमार ने बताया कि स्टेशन परिसर में पंप लगाकर लगातार पानी निकाला जा रहा है।

झूंसी तक चल रहीं ट्रेनें, यात्रियों को हो रही असुविधा

रेलवे प्रशासन ने 23 अगस्त तक रामबाग स्टेशन से चलने और आने वाली कई महत्वपूर्ण ट्रेनों के संचालन में बदलाव किया है। इस अवधि के दौरान मऊ से चलने वाली गाड़ी संख्या 65131–65132 मऊ–प्रयागराज रामबाग मेमू, 65111–65112 बनारस–प्रयागराज रामबाग, 55131–55132 बलिया–प्रयागराज रामबाग, 65113–65114 बनारस–प्रयागराज रामबाग मेमू भी झूंसी तक ही संचालित होंगी। झूंसी से प्रयागराज तक इन ट्रेनों का आवागमन नहीं होगा।

जलभराव से मोर्चे के सारे इंतजाम ढेर

शहर के नाले चोक और सीवर जाम हैं। ऐसे में जल निकासी का रास्ता खोजना अधिकारियों के लिए पहली बन गया है। तमाम तरह के टैक्स भरने के बाद भी लोग घरों में कैद हैं। वह पानी घटने के इंतजार में दिन–रात गुजार रहे हैं।

शहर में विभिन्न चरणों और परियोजनाओं के तहत अब तक 1,400 किमी से अधिक की सीवर लाइन बिछाई जा चुकी है, लेकिन यह किसी काम की नजर नहीं आ रही है। इसके अलावा मानसून से पहले नगर निगम ने 995 नाले–नालियों की सफाई का दावा किया है। फिर भी तीन दिन की बारिश में शहर टापू बन गया।

इस बार हालात बदतर हो गए हैं। कुंभ और महाकुंभ जैसे बड़े आयोजनों के मद्देनजर शहर के पुराने और नए इलाकों में लगातार सीवर लाइन के विस्तार का काम किया गया, जिसमें हालिया योजनाओं के तहत 120 किमी और नई लाइनों का विस्तार प्रस्तावित है, मगर नगर निगम के 80 वार्डों में डाली गई पुरानी सीवर लाइन से लोगों को परेशानी हो रही है। आम दिनों में सीवर जाम रहते हैं, जिसकी वजह से सड़क व गलियों में सीवर का पानी बहता नजर आता है। बारिश के दिनों में हालात और भी खराब हो गए हैं। नाले व सीवर का पानी निकलने के बजाय लोगों के घरों में घुस गया है।

699 करोड़ रुपये की लागत से बिछी सीवर लाइन

मामि गंगे और सीवरेज योजनाओं के तहत भारी धनराशि खर्च की गई है। यह कार्य कई चरणों में हुआ है। इनमें फेज ए, बी और सी जैसे प्रमुख चरण शामिल हैं। प्रत्येक में क्रमशरू 288 करोड़ रुपये, 265 करोड़ रुपये और 146 करोड़ रुपये की राशि व्यय की गई है।

कब–कब डाली गई सीवर लाइन

1. वर्ष 2010 में राजापुर, सोहबतियाबाग, अल्लापुर, दारागंज, करेली, शिवकुटी और सलोरी आदि मोहल्लों में सीवर लाइनें डाली गईं।

2. दिसंबर 2018 में नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत सीवर नेटवर्क और इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण किया गया।

3. अन्य चरण (फेज–ए, बी और सी) में मुट्ठीगंज, दरियाबाद, चकिया, राजरूपपुर और टैगोर टाउन जैसे क्षेत्रों में कई सौ किमी लंबी लाइन डाली गई।

जॉर्जटाउन, अल्लापुर, मुंडेरा, नैनी, रसूलाबाद घाट, अशोक नगर, राजापुर, चकिया, चौक हासिमपुर और करेली में भी सीवर ओवरफ्लो और चोक होने की समस्या बनी हुई है। कई इलाकों में सीवर लाइन का कनेक्शन तक नहीं हो पाया है।

जलभराव का कारण सीवर लाइन नहीं है। जहां–जहां सीवर लाइन डाली गई है, वह पूरी तरह से संचालित है। सड़क चौड़ीकरण के दौरान कई प्रमुख नाले दब गए। इसकी वजह से जल निकासी का रास्ता मुश्किल हुआ है। –आशुतोष सिंह, अधिशासी अभियंता, गंगा प्रदूषण

सीवर लाइन चोक होने की वजह से पंपिंग स्टेशन तक पानी नहीं पहुंच पा रहा है। सड़क चौड़ीकरण में नाले भी दब गए हैं। कई नालों पर अतिक्रमण है। पंप लगाकर पानी निकाला जा रहा है। –साई तेजा, नगर आयुक्त

कानपुर गंगा बैराज से छोड़ा जा रहा 2.95 लाख क्यूसेक पानी, प्रयागराज में बढ़ा बाढ़ का खतरा

प्रयागराज। गंगा–यमुना के बढ़ते जलस्तर के बीच कानपुर गंगा बैराज से छोड़े जा रहे पानी ने प्रयागराज की चिंता बढ़ा दी है। कानपुर बैराज से 2,95,637 क्यूसेक पानी प्रति सेकंड गंगा में छोड़ा जा रहा है। मानसूनी बारिश और नरौरा डैम समेत सहायक नदियों से लगातार पानी आने से बैराज के सभी 30 गेट खोल दिए गए हैं।

गंगा–यमुना के बढ़ते जलस्तर के बीच कानपुर गंगा बैराज से छोड़े जा रहे पानी ने प्रयागराज की चिंता बढ़ा दी है। कानपुर बैराज से 2,95,637 क्यूसेक पानी प्रति सेकंड गंगा में छोड़ा जा रहा है। मानसूनी बारिश और नरौरा डैम समेत सहायक नदियों से लगातार पानी आने से बैराज के सभी 30 गेट खोल दिए गए हैं। ऐसे में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है।

केंद्रीय जल आयोग के आंकड़ों के मुताबिक, बुधवार सुबह आठ बजे तक पिछले 24 घंटे में यमुना का जलस्तर नैनी में 59 सेंटीमीटर और छतनाग में 57 सेंटीमीटर बढ़ा। गंगा फाफामऊ में भी 36 सेंटीमीटर बढ़ी। शाम चार बजे तक दोनों नदियां चार घंटे में नैनी में नौ, छतनाग में आठ और फाफामऊ में चार सेंटीमीटर बढ़ गईं।

खतरे के निशान से 4.34 मीटर नीचे, लेकिन पानी की बढ़त जारी

बुधवार शाम चार बजे गंगा फाफामऊ में 80.39 मीटर, यमुना नैनी में 79.89 मीटर और छतनाग में 79.47 मीटर दर्ज की गई। एसटीपी बक्शी बांध पर जलस्तर 80.05 मीटर रहा। प्रयागराज में बाढ़ का खतरे का निशान 84.734 मीटर है। यानी फाफामऊ में गंगा अभी खतरे के निशान से करीब 4.34 मीटर नीचे है, लेकिन लगातार बढ़ता जलस्तर और ऊपर से आने वाला पानी शहर के लिए चिंता का कारण है।

कानपुर से छोड़ा गया पानी गंगा की धारा के साथ आगे बढ़ेगा। प्रयागराज पहुंचने पर इसका असर गंगा के साथ संगम क्षेत्र में भी पड़ सकता है। यहां गंगा और यमुना का संगम होने के कारण दोनों नदियों के जलस्तर में बढ़ोतरी का असर कछारी क्षेत्रों और नदी किनारे बसे इलाकों पर दिखाई दे सकता है। खासकर निचले इलाकों में पानी पहुंचने की आशंका बढ़ सकती है।

खोले गए बैराज के सभी 30 गेट

कानपुर गंगा बैराज में अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम जलस्तर चेतावनी बिंदु के करीब बताया गया है। लगातार बारिश और ऊपरी जलाशयों से पानी आने के कारण बैराज के सभी 30 गेट खोलकर करीब 2.95 लाख क्यूसेक पानी प्रति सेकंड छोड़ा जा रहा है। बैराज से छोड़े जाने वाला पानी कौशाम्बी और प्रयागराज में गंगा के कछारी इलाके में बाढ़ का खतरा लेकर आ सकता है।

50 हजार का इनामी छैला बाबू नई दिल्ली से गिरफ्तार, गैंगस्टर एक्ट में था वांछित, एसटीएफ ने दबोचा

प्रयागराज। स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) टीम ने गैंगस्टर एक्ट के मुकदमे में वांछित चल रहे 50 हजार रुपये के इनामी छैला बाबू सरोज को नई दिल्ली से गिरफ्तार किया है।

स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) टीम ने गैंगस्टर एक्ट के मुकदमे में वांछित चल रहे 50 हजार रुपये के इनामी छैला बाबू सरोज को नई दिल्ली से गिरफ्तार किया है। मूलरूप से नवाबगंज थाना क्षेत्र के बैरेज श्रृंगवेरपुर गांव निवासी आरोपी पिछले कई महीने से फरार चल रहा था। एसटीएफ के मुताबिक, छैला बाबू के खिलाफ सराय इनायत, सांगीपुर, नवाबगंज, बहरिया और मांडा थानों में चोरी, लूट, मारपीट, आर्म्स एक्ट समेत विभिन्न धाराओं में प्राथमिकी दर्ज हैं। उसके खिलाफ 2024 का एक, 2025 के चार और 2026 के दो एफआईआर बताए गए हैं।

काफी समय से फरार चल रहे आरोपी की तलाश में एसटीएफ की की टीम आरोपी की तलाश में जुटी हुई थी। इसी दौरान टीम को जानकारी मिली कि आरोपी नई दिल्ली में छिपकर रह रहा है। एसटीएफ पुलिस उपाधीक्षक शैलेश प्रताप सिंह के नेतृत्व में प्रभारी जय प्रकाश राय की टीम ने दिल्ली पहुंचकर घेराबंदी की और बुधवार शाम करीब 6रू40 बजे नेताजी नगर थाना क्षेत्र में वरिंदर कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड के गेट के सामने से उसे दबोच लिया।

पूछताछ में आरोपी ने एसटीएफ को बताया कि वह अपने साथियों के साथ मिलकर वर्ष 2025 में चोरी और लूट की कई घटनाओं को अंजाम दे चुका है। इन घटनाओं के संबंध में प्रयागराज के विभिन्न थानों में प्राथमिकी दर्ज हैं। आरोपी के मुताबिक, वह पूर्व में जेल भी जा चुका है। गिरफ्तार आरोपी को नई दिल्ली के सरोजनी नगर थाने की औपचारिक कार्रवाई के बाद संबंधित न्यायालय में पेश करने तथा आगे की विधिक कार्रवाई के लिए प्रयागराज के नवाबगंज थाने में दाखिल कराया गया है।

वेश्यालय में ग्राहक बनकर जाना अपराध नहीं: हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि वेश्यालय में ग्राहक बनकर जाना अपराध नहीं है। सेवाएं लेकर कीमत अदा करने वालों पर अनैतिक देह व्यापार विरोधी कानून के तहत मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। इस टिप्पणी संग न्यायमूर्ति डॉ. गौतम चौधरी की एकल पीठ ने वेश्यालय में पकड़े गए गाजियाबाद के एक आरोपी के खिलाफ लंबित आपराधिक कार्यवाही रद्द कर दी। गाजियाबाद के भोजपुरा चौराहे के निकट डीएलएफ पुलिस चौकी के पास एक मकान में देह व्यापार की सूचना पर पुलिस ने छापा मारा था। मौके से महिलाओं और याची सात पुरुषों समेत 16 लोग पकड़े गए थे। इनमें आरोपी भी शामिल था। आरोप है कि वहां मौजूद महिलाएं देह व्यापार में शामिल थीं और अपनी कमाई का एक हिस्सा मकान मालिक को देती थीं। मामले में आरोपी के खिलाफ भी अनैतिक देह व्यापार विरोधी अधिनियम के तहत आरोपपत्र दाखिल किया गया। ट्रायल कोर्ट ने ट्रायल का सामना करने के लिए आरोपी को बतौर याची तलब किया। इसके खिलाफ याची ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। दलील दी कि वह केवल ग्राहक के रूप में वहां गया था। उसके खिलाफ वेश्यालय चलाने, उसका प्रबंधन करने या देह व्यापार के व्यावसायिक शोषण में शामिल होने का कोई आरोप या साक्ष्य मौजूद नहीं है। हाईकोर्ट ने पाया कि आरोपी की भूमिका महज ग्राहक की थी। कोर्ट ने कहा कि कानून में अपराध के लिए व्यावसायिक शोषण से जुड़ा तत्व होना जरूरी है। कोर्ट ने कहा कि ग्राहक के रूप में वेश्यालय जाने वाले व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा चलाना न्यायिक प्रक्रिया का दुरुपयोग है। लिहाजा, कोर्ट ने याची की याचिका स्वीकार करते हुए ट्रायल कोर्ट में लंबित आपराधिक कार्यवाही, आरोपपत्र और समन आदेश निरस्त कर दिया।

43 पंप लगाए, फिर भी नहीं मिली निजात

प्रयागराज। शहर में जगह–जगह भरे पानी को निकालने के लिए नगर निगम ने 132.50 एमएलडी के 43 पंप लगाए हैं। इनके जरिये सड़कों पर भरे पानी को खींचकर नालों व सीवर लाइनों में गिराया जा रहा है। इस दौरान जल निगम व जलकल की टीम सीवर की सफाई में भी लगी रहीं। फिर भी देर शाम तक कई इलाकों में जलभराव से निजात नहीं मिली। सिर्फ जॉर्जटाउन में ही जल निकासी के लिए बुधवार को चार टीमों के साथ नौ पंप, दो जेसीबी, 12 पाइप लगाए गए। सड़क चौड़ीकरण के दौरान गायब हो चुके नालों को फिर से खोजा गया। सोहबतियाबाग में संगम पेट्रोल टंकी चौराहे पर दो जेसीबी लगाकर करीब छह फीट गड्ढा किया गया। इसके बाद परेड मैदान तक जाने वाले नाले को खोजा गया। सोहबतियाबाग डॉट पुल, जॉर्जटाउन स्विमिंग पूल और अन्य मार्गों पर भरे पानी को पंप लगाकर नाले की तरफ खींचा गया। इस दौरान नगर निगम ने संगम पेट्रोल पंप चौराहे के पास 20 एमएलडी की क्षमता के छह पंप और जल निगम ने नौ एमएलडी क्षमता के तीन पंप लगाए। मौके पर नगर निगम के एई भी मौजूद रहे। वर्ष 2019 कुंभ के दौरान सड़क चौड़ीकरण के कार्य में नालों को सुरक्षित रखने पर किसी का ध्यान नहीं गया। इसमें अधिकतर पुराने नाले सड़कों के अंदर दब गए। अब जलभराव की समस्या सामने आने पर इन नालों को जेसीबी से गड्ढा करके खोजा जा रहा है। महापौर गणेश केसरवानी ने निगम के अधिकारियों के साथ सोहबतियाबाग स्थित कमला भवन के पास जल निकासी की व्यवस्था का जायजा लिया। जलभराव की समस्या पर नाराजगी जताते हुए उन्होंने इसके स्थायी समाधान पर जोर दिया। तीन दिनों से हो रही बारिश से जलभराव की समस्या गहराई है। उधर स्लूज गेट भी बंद कर दिया गया है। इसको देखते हुए सभी जोन में 43 पंप लगाकर पानी निकाला जा रहा है। सड़क चौड़ीकरण के दौरान दबे हुए नाले भी खोजे जा रहे हैं। –शादाब असलम, अपर नगर आयुक्त

यूपी के सरकारी स्कूलों की बदहाली पर भड़कीं मायावती, बोलीं, शिक्षक हैं न पेयजल, लाठी नहीं सही नीयत से काम ले सरकार

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश समेत पूरे उत्तर भारत में सरकारी स्कूलों की जर्जर हालत को लेकर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने केंद्र और राज्य सरकारों पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2013 के बाद जन्मे बच्चे (जेन–अल्फा) आज बेहतर शिक्षा के लिए तरस रहे हैं। जिन मासूमों के हाथ में किताब और खेलने के दिन हैं, वे बुनियादी सुविधाओं के लिए सड़कों पर उतरकर संघर्ष करने को मजबूर हैं। मायावती ने कहा कि उत्तर भारत के राज्यों में स्कूलों की बदतर हालत के कारण छात्र और उनके माता–पिता बेहद चिंतित हैं। अच्छी शिक्षा और उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद में अब ये लोग भी मुखर हो चुके हैं। बच्चे अपनी शुरुआती शिक्षा के लिए जरूरी बुनियादी सुविधाओं के अधिकार की मांग को लेकर स्कूल ठीक करो जैसे अभियानों से जुड़कर प्रदर्शन कर रहे हैं।

बसपा प्रमुख ने आरोप लगाया कि सरकारी स्कूलों की व्यवस्था सुधारने के बजाय सरकारें लगातार इसकी अनदेखी कर रही हैं। यह एक प्रकार से शोषितों–वंचितों के आरक्षण की तरह ही पूरी शिक्षा व्यवस्था को निष्क्रिय बनाने का कुचक्र है। इसके तहत हजारों सरकारी स्कूल बंद किए जा

रहे हैं। आज स्कूलों में न तो भवन ठीक हैं, न पर्याप्त शिक्षक हैं और न ही पेयजल, शौचालय या साफ–सफाई जैसी मूलभूत जरूरतें पूरी हो रही हैं। मायावती ने कहा कि डॉ. भीमराव आंबेडकर के शिक्षित बनो के आह्वान के कारण बहुजन समाज के लिए स्कूली शिक्षा हमेशा से प्राथमिकता रही है। बसपा की चारों उत्तर प्रदेश सरकारों में दबे–कुचले और शोषित वर्ग के बच्चों के हित में शिक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया था, ताकि हर परिवार को रोटी, रोजी और शिक्षा–युक्त आत्म–सम्मान का समतामूलक जीवन मिल सके। यूपी और उत्तर भारत के अन्य राज्यों की सरकारें जेन–अल्फा मासूम बच्चों की बेहतर शिक्षा संबंधी मांगों पर पूरी सहानुभूति, सही नीयत और नीति से काम करें। अपने हक और बुनियादी सुविधाओं के लिए आवाज उठा रहे मासूम छात्र–छात्राओं पर सरकारें किसी भी प्रकार के बल प्रयोग से पूरी तरह से परहेज करें।

बुलेट प्रूफ जैकेट में तैनात जवानों ने डेयरियों का घेराव का भैंसें उठवाई

लखनऊ (संवाददाता)। नगर निगम ने पारा इलाके में अवैध रूप से चलाई जा रही डेयरियों पर फिर एक्शन लिया है। गुरुवार सुबह मोहान रोड के पास और काकोरी मोड़ आदि के मोहल्लों में 3 थानों की पुलिस, एक कंपनी पीएसी बल और ईटीएफ (एन्क्रोचमेंट टास्क फोर्स) के साथ नगर निगम की कैटल कैचर टीम पहुंची। हेलमेट, डंडे और बुलेट प्रूफ जैकेट में तैनात जवानों ने डेयरियों का घेराव किया और निगम टीम ने भैंसें उठवानी शुरू कर दीं। 6 मोहल्लों से 38–40 भैंसें उठवा लीं। इससे पहले टीम ने मंगलवार को ऐसा ही एक्शन लिया था। उस दिन नगर निगम ने 200 से ज्यादा भैंसों को ठाकुरगंज स्थित कांजी हाउस भेजा गया था। नगर निगम और पुलिस टीम ने यह सख्ती 16 अगस्त को हुए हमले के बाद की है। दरअसल, उस दिन अवैध रूप से डेयरी चलाने वाले लोगों ने टीम पर ईंट–पत्थर और भैंस बांधने वाली लोहे की मोटी चेन से हमला कर दिया था। एक दरोगा को बुरी तरह से पीटा गया, जिसमें उनके सिर पर गंभीर चोटें आई थीं। ठाकुरगंज, पारा और सआदतगंज थाना सहित नगर निगम के ईटीएफ बल के करीब 100 जवान मौजूद रहे। पारा पिंक सिटी, बुद्धेश्वर विहार, गद्दियाना में अभियान चलाया गया। उसके बाद काकोरी मोड़ के पास स्थित नरौना गांव और महाम सिटी में अभियान चलाया गया। अधिकतर लोग अपनी भैंसें लेकर भाग गए थे। नगर निगम के पशु कल्याण अधिकारी डॉक्टर अभिनव वर्मा ने बताया कि मंगलवार को कार्रवाई होने से अवैध डेयरियों के संचालकों ने ट्रकों में भरकर पशुओं को हटा दिया है। सुबह 6 बजे से अभियान चला गया। 8.30 बजे तक सिर्फ 10 भैंस मिलीं। उसके बाद काकोरी मोड़ के मोहल्लों में आधे घंटे में करीब 30 भैंसें मिलीं। नगर निगम की टीम के इलाके में आने की सूचना पाते ही लोगों ने भैंसों को छिपाना शुरू कर दिया। कई मोहल्लों में लोगों ने भैंसों को बाहर से घरों के अंदर ले जाकर बांध दिया। कहीं–कहीं लोगों ने एकांत वाली जगहों पर भैंसों को बांध दिया। सलेमपुर पतोरा गांव में तो लोगों ने भैंसों को जलकुंभी वाले तालाब में हांक दिया। इस तालाब की तरफ कीचड़ ज्यादा होने से लोग आते–जाते नहीं हैं। हालांकि, निगम की टीम को यह बात पता चल गई और वहां पहुंचकर तालाब से भैंसें बाहर निकलवा लीं।

संस्थागत प्रसव से मातृ मृत्युदर में आई गिरावट

मातृ एवं नवजात स्वास्थ्य को सुरक्षित करने में असरदार जननी सुरक्षा योजना

1 अप्रैल से 9 अगस्त तक हुए सात लाख से अधिक संस्थागत प्रसव

लखनऊ (संवाददाता)। डबल इंजन सरकार की ओर से संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने और प्रसव के दौरान मातृ एवं नवजात स्वास्थ्य को सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई जननी सुरक्षा योजना जेएसवाई उत्तर प्रदेश में लगातार असरदार साबित हो रही है। वर्तमान वित्तीय वर्ष में 1 अप्रैल से 9 अगस्त तक सात लाख से अधिक संस्थागत प्रसव इसका उदाहरण हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश से लेकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक कई जिलों में योजना के बेहतर क्रियान्वयन का असर दिखाई दे रहा है। योगी सरकार के इन प्रयासों से मातृ मृत्यु दर को कम करने में सफलता मिल रही है।सचिव स्वास्थ्य एवं राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन निदेशक डॉ. पिंकी जोवल ने बताया कि डबल इंजन सरकार की ओर से सुरक्षित प्रसव पर जननी सुरक्षा योजना के तहत सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में गर्भवती महिलाओं को प्रसव पर आर्थिक सहायता ग्रामीण क्षेत्र में 1,400 रुपए और शहरी क्षेत्र में 1,000 रुपए दी जाती है। उद्देश्य गर्भवती महिलाओं को घर पर प्रसव के बजाय अस्पताल या स्वास्थ्य केंद्र में प्रसव कराने के लिए प्रोत्साहित करना है। योजना से मिलने वाली धनराशि प्रसव से जुड़े खर्चों में मदद करती है और महिलाओं को सुरक्षित प्रसव सेवाओं तक पहुंचने के लिए प्रेरित करती है। प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में योजना के बेहतर प्रदर्शन से स्पष्ट है कि संस्थागत प्रसव को लेकर जागरूकता बढ़ रही है। पश्चिम के हाथरस, मैनपुरी, फिरोजाबाद, हरदोई, कानपुर देहात, मुजफ्फरनगर, बागपत तो पूरब से जौनपुर, अम्बेडकरनगर और सोनभद्र ने योजना के क्रियान्वयन और लाभार्थियों तक भुगतान पहुंचाने में अच्छा प्रदर्शन किया है। सोनभद्र से मुजफ्फरनगर तक का बेहतर प्रदर्शन यह दर्शाता है कि जननी सुरक्षा योजना प्रदेश में सुरक्षित मातृत्व की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। केजीएमयू की स्त्री रोग विभागाध्यक्ष डॉ. अंजू अग्रवाल के अनुसार संस्थागत प्रसव केवल प्रसव की जगह बदलने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मां और नवजात दोनों की सुरक्षा से सीधे जुड़ा है। अस्पताल में प्रसव होने पर प्रसव के दौरान होने वाली जटिलताओं की समय रहते पहचान और उपचार संभव होता है। स्वास्थ्य सचिव डॉ. पिंकी जोवल ने बताया कि जननी सुरक्षा योजना के तहत एक अप्रैल से 9 अगस्त तक संस्थागत प्रसव 7,17,736 के सापेक्ष 5,43,661 लाभार्थियों का भुगतान हो चुका है। हाथरस, मैनपुरी, फिरोजाबाद, हरदोई, कानपुर देहात, मुजफ्फरनगर, जौनपुर, बागपत, अम्बेडकरनगर व सोनभद्र ने उत्कृष्ट कार्य किया है। इन सभी जिलों में 80 प्रतिशत से अधिक लाभार्थियों का भुगतान हो चुका है। सिर्फ सिद्धार्थनगर, बहराइच व अलीगढ़ में 50 प्रतिशत या उससे कम भुगतान हुआ है जिसके लिए स्थानीय अधिकारियों को सभी अवरोध दूर कर शत प्रतिशत लाभार्थियों का भुगतान करने के निर्देश दिए गए हैं।

आईटीआई को उद्योगों से जोड़कर युवाओं के लिए बढ़ाये रोजगार के अवसर

गोरखपुर, मुजफ्फरनगर और बरेली में शीघ्र शुरू करें सीआईआईआईटी केंद्रों का संचालन : योगी

लखनऊ (संवाददाता)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमशीलता विभाग की कार्ययोजना की समीक्षा करते हुए कहा कि आईटीआई को अधिक से अधिक उद्योगों से जोड़ा जाए। उद्योगों की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण विकसित करने के साथ ही अप्रेंटिसशिप तथा ऑन–जॉब प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाए, ताकि प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर मिल सकें। मुख्यमंत्री ने कहा कि कौशल विकास को रोजगार के साथ वैश्विक अवसरों से भी जोड़ा जाए। आईटीआई और उद्योगों के बीच निरंतर संवाद की व्यवस्था होनी चाहिए और प्रत्येक मंडल मुख्यालय पर नियमित रोजगार मेलों का आयोजन करें। मुख्यमंत्री ने सेंटर फॉर इनोवेशन, इन्वेंशन, इन्क्यूबेशन एंड ट्रेनिंग केंद्रों की प्रगति की समीक्षा करते हुए गोरखपुर, मुजफ्फरनगर और बरेली केंद्रों का संचालन शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इन केंद्रों को आधुनिक तकनीक और उद्योग आधारित प्रशिक्षण के उत्कृष्ट केंद्र के रूप में विकसित किया जाए। बैठक में बताया गया कि टाटा टेक्नोलॉजीज के सहयोग से 150 राजकीय आईटीआई के उन्नयन का कार्य किया जा रहा है, जबकि 62 अन्य आईटीआई के उन्नयन की प्रक्रिया भी आगे बढ़ रही है। उद्योगों के सहयोग से 37 राजकीय आईटीआई में एडवांस स्किल लैब स्थापित की गई । अनुदेशकों की उपलब्धता को प्रशिक्षण की गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए चयन प्रक्रिया को तेजी से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए। अनुदेशकों को नियमित नियुक्ति की प्रक्रिया में उनके अनुभव और कार्य के आधार पर वेटेज देने का प्रावधान किया जाए। 2,406 अनुदेशक पदों पर चयन किया गया है और 2,200 से अधिक चयनित अनुदेशक कार्यभार ग्रहण कर चुके हैं। प्रशिक्षणार्थियों के लिए कार्यस्थल पर हिंदी की आधिकारिक शब्दावली और प्रयोग से संबंधित प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है तथा प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य किया गया है। जापान और जर्मनी जैसे देशों में कुशल जनशक्ति की मांग को देखते हुए विदेशी भाषाओं का डिजिटल प्रशिक्षण शुरू करने के लिए कंपनियों के चयन की प्रक्रिया चल रही है। मुख्यमंत्री ने जीरो पॉवर्टी अभियान से जुड़े परिवारों के बच्चों और युवाओं को

कौशल प्रशिक्षण देकर रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़ने पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि ऐसे परिवारों के 14 से 35 वर्ष आयु वर्ग के 9.52 लाख युवाओं का सत्यापन पूरा हो चुका है, जिनमें 1.44 लाख पात्र चिन्हित हुए हैं। इनमें 8,746 युवाओं का प्रशिक्षण के लिए पंजीकरण हो चुका है। बैठक में बताया गया कि पिछले पांच वर्षों में उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन के माध्यम से 21.13 लाख युवाओं को प्रशिक्षण और 12.94 लाख युवाओं को सेवायोजन मिला है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब कौशल प्रशिक्षण की सफलता का आकलन प्रशिक्षण की संख्या से अधिक रोजगार और स्वरोजगार के परिणामों से किया जाए। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के युवाओं को आधुनिक कौशल, उद्योग आधारित प्रशिक्षण और वैश्विक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराते हुए प्रदेश को देश का अग्रणी कौशल हब बनाने की दिशा में तेजी से कार्य किया जाए।

पति ने पहले बैंककर्मी पत्नी को गोली मारी, फिर बहन की हत्या की, आखिर में खुद भी दी जान

लखनऊ (संवाददाता)। लखनऊ के गोमतीनगर थाना क्षेत्र में गुरुवार को सनसनीखेज वारदात सामने आई। बैंक अधिकारी पत्नी और अपनी बहन की गोली मारकर हत्या करने के बाद बैंककर्मी पति ने खुद को भी गोली मारकर जान दे दी। मृतका दिव्या मिश्रा मशहूर यूट्यूबर प्रज्ञा मिश्रा की बहन थीं। घटना के बाद पुलिस और फोरेंसिक टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। घटना की जानकारी मिलने पर प्रज्ञा मिश्रा ने फेसबुक पर पोस्ट कर बताया कि उन्हें अभी फोन आया है कि गोमतीनगर में उनकी बहन को गोली मार दी गई है और वह लोहिया अस्पताल में हैं। उन्होंने अपनी बहन की सलामती के लिए लोगों से प्रार्थना की अपील की थी।यूट्यूबर प्रज्ञा मिश्रा की बहन की हत्याजानकारी के मुताबिक, दिव्या मिश्रा आईसीआईसीआई बैंक में असिस्टेंट मैनेजर थीं और आलमबाग में रहती थीं। गुरुवार दोपहर उनके पति मानस बाजपेई ने उन्हें बैंक के बाहर फोन कर ऑफिस से बाहर बुलाया। दोनों के बीच कुछ देर बातचीत हुई। इसके बाद मानस ने दिव्या को गोली मार दी और मौके से फरार हो गया। बताया जा रहा है कि दिव्या ने करीब एक साल पहले पति मानस से तलाक के लिए अदालत में अपील दायर की थी। घटना के बाद मानस सीधे करीब दो किलोमीटर दूर अपने घर पहुंचा। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, वह पसीने से बुरी तरह भीगा हुआ था। घर के अंदर जाने के बाद उसने कमरे का दरवाजा बंद कर लिया। इसके बाद मानस ने अपनी बहन शीबा बाजपेई को गोली मार दी। फिर खुद को भी गोली मारकर आत्महत्या कर ली। सूचना मिलने पर पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे। फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है। वारदात से पहले मानस ने वॉट्सऐप पर एक स्टेटस भी लगाया था। इसमें उसने पत्नी की हत्या करने की बात लिखी और आरोप लगाया कि उसने उसे धोखा दिया। स्टेटस में उसने अपनी बहन प्रज्ञा मिश्रा और उनके पति भरत यादव का भी जिक्र किया था। पुलिस के मुताबिक, मानस ने पहले गोमतीनगर स्थित आईसीआईसीआई बैंक के बाहर अपनी पत्नी और रिलेशनशिप मैनेजर दिव्या मिश्रा की गोली मारकर हत्या की। इसके बाद वह अपने घर पहुंचा, जहां अपनी बहन सीमा को भी गोली मार दी। दोनों की हत्या के बाद मानस ने खुद को भी गोली मारकर आत्महत्या कर ली। डीसीपी ईस्ट डॉ. दीक्षा शर्मा के मुताबिक, पुलिस को पहले गोमतीनगर थाना क्षेत्र में एक महिला को गोली मारे जाने की सूचना मिली थी। मौके पर पहुंचने पर पता चला कि महिला को उसके पति ने गोली मारी थी। इसके कुछ ही देर बाद पुलिस को एक व्यक्ति द्वारा अपनी बहन की हत्या करने और खुद को गोली मार लेने की सूचना मिली। जांच में दोनों घटनाओं का कनेक्शन सामने आया और पुलिस ने पुष्टि की कि दोनों वारदातों को अंजाम देने वाला व्यक्ति मानस वाजपेयी ही था। पुलिस के अनुसार, आरोपी के मोबाइल फोन पर लगा वॉट्सऐप स्टेटस घटना से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी दे रहा था। इसी के आधार पर पुलिस ने घटनाक्रम की कड़ियां जोड़नी शुरू कीं। दिव्या मिश्रा गोमतीनगर स्थित आईसीआईसीआई बैंक में रिलेशनशिप मैनेजर के पद पर कार्यरत थीं। गुरुवार को वह रोज की तरह बैंक पहुंची थीं। बताया जा रहा है कि इसी दौरान उनके पति मानस ने उन्हें फोन कर बैंक के बाहर मिलने के लिए बुलाया। दिव्या जैसे ही बाहर आईं, आरोपी ने उन पर गोली चला दी। गंभीर रूप से घायल दिव्या को अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस के मुताबिक, आत्महत्या से पहले मानस ने वॉट्सऐप पर स्टेटस लगाया था। इसमें उसने लिखा कि उसने पत्नी की हत्या कर दी है, क्योंकि उसने उसे धोखा दिया था। उसने अपनी बहन और खुद को भी मारने की बात लिखी। स्टेटस में दिव्या की बहन प्रज्ञा और उनके पति भरत यादव को मामले की जानकारी होने का भी दावा किया गया है। पुलिस की शुरुआती जांच में सामने आया है कि दिव्या ने करीब एक साल पहले पति मानस से तलाक के लिए अदालत में अपील दायर की थी। इसके बाद वह आलमबाग में रहने लगी थी। वहीं मानस हुसड़िया चौराहे के पास अपनी बहन सीबा के साथ किराए के मकान में रह रहा था। दिव्या सोशल मीडिया से जुड़ीं प्रज्ञा मिश्रा की बहन भी थीं। पत्नी की हत्या करने के बाद मानस अपने घर पहुंचा। पुलिस के मुताबिक, वहां उसने अपनी बहन को भी गोली मार दी। इसके बाद उसने खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत से पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। पुलिस ने आरोपी के घर से तीन हथियार बरामद किए हैं।

आया जब सैलाब

(कुण्डलिया)

उम्मीदों को रौंदकर, आया जब सैलाब।
ख़्वाब उड़न छू हो गए, ज़हर बन गया आब।
ज़हर बन गया आब, परेंशा प्राणी दिखते।
छत बिन हुए मकान, खुले में हैं सब रहते।
सुन लो कहें प्रदीप, छोड़कर तरकीबों को।
हरियाली से आज, जोड़ लो उम्मीदों को।।

बेकाबू नदियाँ हुईं, पानी करे विनाश।
बादल के पीछे दिखें, जब पूरा आकाश।
जब पूरा आकाश, हुआ अब जीना दूभर।
डूब रहे हैं गाँव, शहर भी हुआ समन्दर।
सबकुछ देख प्रदीप, कह रहे सुन लो बाबू।
करो वृक्ष से प्रेम, न काटो हो बेकाबू।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

वरिष्ठ शायर जनाब जफर मिर्जापुरी का निधन, साहित्य जगत में शोक व्याप्त

मिर्जापुर। जाने माने वरिष्ठ शायर जनाब जफर मिर्जापुरी का लम्बी बीमारी के बाद बुद्धवार की सुबह निधन हो गया। वह लगभग 88 वर्ष के थे। उनके निधन से साहित्य और सामाजिक जीवन में शोक व्याप्त हो गया। अनेक लोगों ने उनके निवास जाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में सर्वश्री गणेश गंभीर, लल्लू तिवारी, भोलानाथ कुशवाहा, अरविंद अवस्थी, आनंद अमित,मुहिब मिर्जापुरी, केदारनाथ सविता, लाल व्रत सिंह सुगम, इम्तियाज अहमद गुमनाम, डॉ अनुराधा ओस, खुर्शीद भारती, इरफान कुरेशी, इला जायसवाल, नंदिनी वर्मा, हसन जौनपुरी आदि है।

युवक को लात–घूसों और लकड़ी के फंटे से पीटा, 18 घंटे बाद तोड़ा दम

लखनऊ (संवाददाता)। सरोजनी नगर में 30 साल के युवक की पीट–पीटकर हत्या कर दी गई। उसके 2 साथियों ने बुधवार दोपहर करीब 3 बजे छेनी–हथौड़ी बेचने का आरोप लगाकर उसे पीटा। गुरुवार सुबह करीब 9 बजे उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है। मामले में नामजद एफआईआर दर्ज की है। मृतक आशीष द्विवेदी अमौसी गांव में किराए के मकान में रहता था। घटना सरोजनीनगर थाना क्षेत्र के साईं सुरक्षा नगर स्थित मंदिर के पास की है। आशीष द्विवेदी बाराबंकी जिले के रामसनेही घाट थाना के टेमा गांव के रहने वाले थे। करीब 3 साल से अपने छोटे भाई मनीष और चाचा प्रमोद व विनोद के साथ अमौसी गांव में मनोज सिंह के मकान में किराए पर रहते थे। बुधवार दोपहर करीब 3 बजे आशीष काम से घर लौट रहे थे। घर से लगभग 400 मीटर दूर साईं सुरक्षा नगर स्थित मंदिर के पास 2 लोगों ने उसे लात–घूसों और लकड़ी के फंटे से बुरी तरह से पीटा। वह गंभीर रूप से घायल होकर बेहोश हो गया। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। उसे सरोजनीनगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में भर्ती कराया। प्राथमिक उपचार के बाद परिजन रात में उसे किराए के घर पर ले आए। बुधवार को आशीष का छोटा भाई मनीष गांव गया था। घटना की जानकारी मिलने पर गुरुवार सुबह मनीष अमौसी गांव आया। आशीष ने मनीष को बताया कि उसका साथी राजगीर मिस्त्री फूलचंद श्रीवास्तव और प्लंबर कल्लू उर्फ श्यामलाल रावत से विवाद हुआ था।

इन दोनों ने उस पर छेनी–हथौड़ी बेचने का आरोप लगाते हुए उसकी पिटाई की थी। इसके बाद गुरुवार सुबह करीब 9 बजे आशीष ने घर में ही दम तोड़ दिया। मनीष ने डायल 112 पर सूचना दी। पुलिस ने आशीष को दोबारा सरोजनीनगर सीएचसी पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने दोनों आरोपियों के खिलाफ नामजद शिकायत दी। पुलिस की जांच में आया है कि आशीष की पिटाई करने के बाद कल्लू उसके चाचा प्रमोद व विनोद के पास पहुंचा। उनसे कहा कि आशीष ने उसका सामान बेच दिया है, जिसके लिए वह थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने जा रहा है।

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना सं. 6520262027 ई-टेण्डरिंग निविदा सूचना दिनांक : 17.08.2026

मण्डल रेल प्रबन्धक /इंजीनियरिंग /उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से निम्नलिखित कार्यों के लिये, निर्धारित प्रपत्र पर निम्नलिखित ई-निविदाएँ, दिनांक 16.09.2026 को 13:30 बजे तक आमंत्रित की जाती हैं। कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है:-

क्र.सं. 01, निविदा नं.: 140, कार्यों का विवरण: सहायक मंडल अभियंता / लाइन / प्रयागराज के अधीन क्षेत्र में सेतु संख्या 41, 42, 42ए और 43 का विस्तार तथा अन्य विविध कार्य।

कार्य का अनुमानित मूल्य (रु.): 4,13,89,920.21	बयाने की रकम (रु.): 8,27,800.00

कार्य समापन की अवधि: 18 (अठारह) माह, निविदा खुलने की तिथि: 16.09.2026, सिमिलर वर्क के लिये न्यूनतम वांछनीय आधार: किसी भी प्रकार के सेतु का निर्माण।

क्र.सं. 02, निविदा नं.: 141, कार्यों का विवरण: सहायक मंडल अभियंता/लाइन/प्रयागराज के अधीन क्षेत्र में सेतु संख्या 112 (अपलाइन एवं डाउनलाइन) का पीएससी स्लैब लगाकर पुनर्निर्माण तथा अन्य विविध कार्य।

कार्य का अनुमानित मूल्य (रु.): 1,73,77,177.90	बयाने की रकम (रु.): 3,47,600.00

कार्य समापन की अवधि: 12 (बारह) माह, निविदा खुलने की तिथि: 16.09.2026, सिमिलर वर्क के लिये न्यूनतम वांछनीय आधार: रनिंग ट्रैक पर कोई भी सेतु का कार्य या रनिंग ट्रैक पर री-गर्डरिंग का कार्य।

नोट: 1. ई-निविदा प्रपत्र सभी निविदादाताओं को निःशुल्क निर्गत किये जायेंगे। 2. उपर्युक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण निविदा प्रपत्र सहित वेबसाइट www.ireps.gov.in पर समय 13:30 बजे तक निविदा खुलने की निर्धारित तिथि 16.09.2026 तक उपलब्ध है। 3. उपर्युक्त निविदा में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप में बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। इस प्रयोजन हेतु वेन्डरों को चाहिये कि वे अपने आपको I.T.Act.2000 के अन्तर्गत C.C.A. द्वारा जारी डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र के साथ IREPS की वेबसाइट पर पंजीकृत करायें। 4. निविदा की दरें केवल डिजिटल हस्ताक्षरित फाइनेन्शियल रेट पेज पर ही विचारणीय हैं। दरें तथा अन्य वित्तीय प्रभार अन्य किसी भी फार्म/लेटरहेड पर यदि संलग्न हैं, तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा तथा सीधी तौर पर अमान्य कर दिया जायेगा। 5. निविदादाता अपनी निविदा के साथ निर्धारित प्रोफार्मा पर एक प्रमाण-पत्र, जैसा निविदा प्रपत्र में उल्लिखित है, प्रस्तुत करेंगे, जिसके अभाव में उनकी निविदा अविचारणीय होगी तथा निरस्त कर दी जायेगी। 6. माल एवं/अथवा सेवाओं के सप्लायर / ठेकेदार समय-समय पर निर्धारित जी. एस. टी. एक्ट तथा नियमों के अन्तर्गत होंगे। 7. संलग्न किये जाने वाले सभी प्रपत्र निविदाकर्ता द्वारा हस्ताक्षरित होने चाहिये। 8. निविदा सूचना को उत्तर मध्य रेलवे की वेबसाइट www.ncr.indianrailways.gov.in पर भी अपलोड कर दिया गया है। 9. बयाने की राशि केवल नेटबैंकिंग अथवा गेटवे भुगतान के रूप में ही स्वीकार की जायेगी। 10. किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिये IREPS की वेबसाइट की हेल्प लाइन से सम्पर्क किया जा सकता है। 11. ऑनलाइन निविदा निविदा खुलने की तिथि 16.09.2026 को समय 13:30 बजे तक प्रस्तुत की जा सकती है। 12. निविदादाता को जी.सी.सी. 2022 भाग-I के पैरा 10 से 18 के अनुपालन में उल्लिखित आवश्यक दस्तावेजों को निविदा के साथ अनिवार्य रूप से संलग्न करना है अथवा उनकी निविदा अपूर्ण मानी जायेगी एवं तदनुसार अविचारणीय होगी। 1919/26 (D)

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR

सम्पादकीय.....

एक खत्म, दूसरा शुरू

झारखंड में करीब 25 दिन तक चले छात्र आंदोलन के बीच मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोमवार को विवादित कंपनी टीडीपीएल के संचालन में हुई जेपीएससी–14, जेएसएससी–सीजीएल की परीक्षाओं को रद्द करने की घोषणा की। साथ ही घोषणा कर दी कि जेपीएससी 11 व 13 की भी जांच की जाएगी। इसके अलावा परीक्षाओं के घोषित परिणाम भी रद्द करने का ऐलान कर दिया गया। यानी टीडीपीएल के माध्यम से जो भी अभ्यर्थी चुने गए, उनका चयन भी रद्द कर दिया गया। इससे पहले मुख्यमंत्री ने सचिवालय में ग्यारह मंत्रियों के साथ इस मुद्दे पर व्यापक विमर्श किया। छात्र आंदोलन के दबाव में काम कर रही राज्य सरकार की कैबिनेट बैठक करीब साढ़े चार घंटे तक चली। दरअसल, छात्रों के कई खेमे अपनी मांगों को लेकर आंदोलनरत थे। मुख्यमंत्री की घोषणा के अनुसार जिन परीक्षाओं को रद्द किया गया,उनमें चौदहवीं जेपीएससी सिविल सेवा रेगुलर, जेपीएससी बैकलॉग 2023, जेपीएससी बैकलॉग 2025, फॉरेस्ट रेंज अफसर, सहायक वन संरक्षक और सिविल जूनियर आदि की नियुक्तियां शामिल हैं। दरअसल, इन परीक्षाओं का संचालन जेपीएससी के माध्यम से किया गया। वहीं दूसरी ओर सीजीएल परीक्षा से चयनित 1975 लोगों की नौकरियां भी अब समाप्त मानी जाएंगी। सरकार ने वायदा किया है कि वर्ष 2014 के बाद हुई सभी नियुक्ति परीक्षाओं की जांच भी की जाएगी। यह जांच कार्य एक न्यायिक आयोग करेगा। बाकायदा एक आईएएस अधिकारी की अध्यक्षता में सुधारों के लिये एक कमेटी भी बनायी गई है। हालांकि, कुछ आंदोलनकारी छात्र सीबीआई जांच की मांग पर अड़े हैं। हालांकि, सरकार की घोषणा के बाद छात्रों का आंदोलन तो खत्म हो गया, लेकिन इस घोषणा के बाद सचिवालय परिसर में उन नियुक्त प्रतिभागियों की भीड़ जुट गई, जो जेएसएससी के माध्यम से परीक्षा उतीर्ण करके नौकरी हासिल कर चुके थे। सरकार की घोषणा के तुरंत बाद विभिन्न चयनित प्रतिभागियों का हुजूम सचिवालय में जमा होना शुरू हुआ। उनके लिये यह खबर स्तब्ध करने वाली थी। उनका दुख और गुस्सा स्वाभाविक ही है। बहरहाल, अब राज्य सरकार के खिलाफ झारखंड कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षा में चयनित होने के बाद हटाये गए लोगों ने मोर्चा खोल दिया है। उनका कहना था कि मुख्यमंत्री एक बयान देकर दो हजार लोगों को सरकारी नौकरी से कैसे निकाल सकते हैं? वे इसे सरकारी अन्याय बता रहे हैं। उनकी दलील है कि हम सुबह नौकरी पर थे,लेकिन शाम होते ही हमें नौकरी से हटा दिया गया। उनका कहना था कि कोर्ट के आदेश के बाद ही हमें नौकरी मिली है। उल्लेखनीय है कि जेएसएससी–सीजीएल की परीक्षा दिसंबर 2023 में आयोजित हुई थी। लेकिन पेपर लीक होने के बाद परीक्षा सितंबर 2024 में फिर से हुई। फिर पेपर लीक की आशंका के बीच मामला अदालत पहुंचा। कोर्ट के आदेश के बाद परीक्षा परिणाम घोषित किया गया था। साथ ही तीस दिसंबर को सफल प्रत्याशियों को बाकायदा नौकरी के लिए नियुक्ति पत्र दे दिए गए। अब सरकार द्वारा ये नियुक्तियां रद्द करने से प्रतिभागी बदहवास हैं क्योंकि कई लोगों ने लोन लेकर अपना जीवन स्तर सुधारा, उनकी बैंक की किश्तें जा रही हैं। अब उनकी आंखों के सामने अंधेरा है। उनकी मांग है कि सरकार कायदे से जांच कर ले, लेकिन उन्हें नौकरी से न हटाए। सभी लोग धांधली से भर्ती नहीं हुए हैं। उनका तर्क है कि भीड़ के दबाव में निर्दोष लोगों को सजा नहीं दी जा सकती। हटाये गए कर्मचारियों की आंखें नम हैं। उनमें कई लोग ऐसे हैं जो अपनी दूसरी नौकरियां छोड़कर सरकारी नौकरी के प्रलोभन में आए। दुखी व हताश हटाये गए कर्मचारी बारिश में धरने पर बैठे रहे क्योंकि उन्हें अधिकारियों ने सचिवालय से बाहर कर दिया था। वहीं दूसरी ओर हटाए गए कर्मियों के घर वाले भी सदमे में हैं। राज्य सरकार भी मुश्किल में है क्योंकि सीबीआई जांच की मांग कर रहे छात्रों की दलील है कि उनका आंदोलन अभी समाप्त नहीं हुआ है। वहीं सरकार के सामने हटाये गए अधिकारियों व कर्मचारियों का नया मोर्चा खुल गया है। हटाये गए कर्मचारी इस फैसले के खिलाफ कानूनी लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं। वे सरकार के लिखित आदेश की प्रतीक्षा में हैं।

चीन का आइस सिल्क रोड, आर्कटिक में सबसे पहले पहुंचना क्यों मायने रखता है

असद मिर्जा

पिघलती बर्फ और सुलगते मध्य पूर्व ने चीन को एक नया व्यापारिक मार्ग और एक शुरुआती बढ़त दे दी है। जैसे–जैसे बीजिंग नॉर्दर्न सी रूट को एक कार्यशील शिपिंग कारोबार में बदल रहा है, वह चुपचाप इस नक्शे को फिर से खींच रहा है कि वैश्विक व्यापार पर किसका नियंत्रण है और भारत सहित अन्य देश इससे तालमेल बिठाने के लिए जूझ रहे हैं। इतिहास में हर बड़े व्यापारिक मार्ग ने उसी को पुरस्कृत किया है जिसने उसे सबसे पहले मानचित्रित, सुरक्षित और सामान्य किया, मसालों के मार्गों पर वेनिस, स्वेज पर ब्रिटेन, और युद्धोत्तर प्रशांत महासागर पर अमेरिका। अब चीन आर्कटिक में वही भूमिका चाहता है, और इसे हासिल करने के लिए उसने असाधारण तेजी दिखाई है। इसका ट्रिगर मध्य पूर्व रहा है। हूती हमलों से बाब–अल–मंडेब जलडमरूमध्य में बाधा और ईरान युद्ध से होर्मुज जलडमरूमध्य पर दबाव के चलते, 23 जुलाई 2026 को टैंकरों पर हमलों के बाद तेल की कीमतें 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर चली गईं, और शिपिंग कंपनियां रेड सी कॉरिडोर को लेकर पहले से कहीं अधिक सतर्क हो गईं। चीन का जवाब था उस मार्ग को तेजी से आगे बढ़ाना जिसे वह वर्षों से चुपचाप तैयार कर रहा थारू रूस के नॉर्दर्न सी रूट (एनएसआर) के माध्यम से आइस सिल्क रोड, जो एशिया और यूरोप के बीच गर्मियों के पारगमन समय को लगभग आधा कर सकता है। नतीजे अब प्रयोगात्मक नहीं रह गए हैं। सितंबर 2025 में, कंटेनर जहाज इस्तांबुल ब्रिज ने चीन–यूरोप के बीच पहली सीधी आर्कटिक यात्रा पूरी की, जो निंगबो–झोऊशान से फेलिक्सटो, हैम्बर्ग और गदान्स्क होते हुए नीदरलैंड्स पहुंचा, इस यात्रा को चीन के परिवहन मंत्रालय ने दुनिया का पहला आर्कटिक कंटेनर मार्ग बताया, जो विशेष रूप से श्सीमा–पार ई–कॉमर्स और उच्च मूल्य–वर्धित वस्तुओं के लिए डिजाइन किया गयाश था। अगस्त 2026 तक, चीनी शिपिंग कंपनी सी लीजेंड ने उस पहली यात्रा को एक नियमित साप्ताहिक सेवा में बदल दिया था, और चाइना शिप ओनर्स एसोसिएशन ने जुलाई–सितंबर की एक औपचारिक आर्कटिक शिपिंग विंडो और 20,000 टीईयू की संयुक्त कंटेनर व बहुउद्देशीय बेड़े क्षमता की पुष्टि की। जो काम एक अकेले जहाज द्वारा अनजाने पानी को टटोलने से शुरू हुआ था, वह एक साल के भीतर व्यापारिक ढांचे का एक नियमित हिस्सा बन गया है। चीन की जल्दबाजी सोची–समझी है, और यह उन तीन गणनाओं पर टिकी है जिन्हें चीनी सरकारी मीडिया ने स्पष्ट रूप से बताया है। पहला है अतिरिक्त सुरक्षारू बीजिंग नहीं चाहता कि यूरोप के साथ उसका व्यापार किसी एक ही कॉरिडोर का बंधक बने। दूसरा है रूस के साथ रिश्ता। चूंकि एनएसआर लगभग पूरी तरह रूस–नियंत्रित जलक्षेत्र से होकर गुजरता है। चीन की शिपिंग कंपनियां रूस के मौन सहयोग से इस मार्ग पर काम करती हैं जिससे चीनी शिपिंग को एक ऐसी संरचनात्मक बढ़त मिलती है जिसकी बराबरी फिलहाल एमएससी, मार्स्क और अन्य बड़ी पश्चिमी कंपनियां नहीं कर पातीं। तीसरा, और सबसे महत्वपूर्ण, है मानक तय करना। शिपिंग मार्ग केवल भौगोलिक नहीं होते, वे बीमा ढांचों, बंदरगाह प्रोटोकॉल, आइसब्रेकर–एस्कॉर्ट व्यवस्थाओं और शेड्यूलिंग मानदंडों से बनते हैं, जो एक बार स्थापित हो जाने के बाद नए प्रवेशकर्ताओं के लिए दोहराना महंगा साबित होता है। बीजिंग की आर्कटिक मुहिम को उस व्यापक पैटर्न से अलग करके नहीं देखा जा सकता जो ईरान युद्ध के बढ़ने के बाद से दिखाई दे रहा है, चीनी व्यापार और ऊर्जा को ढोने वाली हर धमनी को व्यवस्थित रूप से सुरक्षित करना। चीन ने एक साथ मध्य एशिया के मिडिल कॉरिडोर के जरिए जमीनी मार्गों को गहरा किया है, कजाखस्तान के साथ सड़क मार्गों का विस्तार किया है जो अब उसके मध्य एशियाई व्यापार का आधे से अधिक हिस्सा सड़क मार्ग से ढोते हैं, और आर्कटिक विकल्प को आगे बढ़ाया है, एक ही अंतर्निहित आशंका के विरुद्ध तीन अलग–अलग बीमा पॉलिसियां, कि पश्चिम–प्रभुत्व वाले समुद्री अड़चन बिंदुओं का इस्तेमाल कभी चीनी व्यापार के खिलाफ किया जा सकता है। चीनी सरकारी मीडिया आर्कटिक को संप्रभुता और सुरक्षा के आधार पर भी दृढ़ता से पेश करता है, इस क्षेत्र में चीन खतरा के पश्चिमी दावों को खारिज करते हुए और इस बात पर जोर देते हुए कि बीजिंग की गतिविधियां, एक स्वघोषित निकट–आर्कटिक राज्य के रूप में, समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन के तहत वैध और किसी सैन्य इरादे से मुक्त हैं। पश्चिमी शिपिंग कंपनियोंऔर यूरोप के लिए, आइस सिल्क रोड केवल एक भू–राजनीतिक समस्या नहीं बल्कि एक प्रतिस्पर्धी समस्या भी है। अगर चीनी झंडे वाले जहाज निंगबो से फेलिक्सटो तक की यात्रा स्वेज के रास्ते 40 दिनों के मुकाबले लगभग 18–20 दिनों में पूरी कर सकते हैं, तो यूरोपीय आयातकों को एक तेज, सस्ता विकल्प मिलता है, लेकिन ऐसा विकल्प जो चीन–रूस शिपिंग अवसंरचना, बीमा और बंदरगाह संचालन पर तेजी से निर्भर होता जा रहा है, जिससे उस निर्भरता में और गहराई आती है जिसे ब्रसेल्स वर्षों से कम करने की कोशिश कर रहा है। खाड़ी देशों और मिस्र के लिए, एक टिकाऊ आर्कटिक विकल्प उस दीर्घकालिक रणनीतिक लाभ को कमजोर करता है जो स्वेज और होर्मुज ने पैदा किया है, भले ही, जैसा कि कुछ विश्लेषक आगाह करते हैं आर्कटिक कंटेनर यातायात आने वाले वर्षों तक एक पूर्ण विकल्प के बजाय एक मौसमी अतिरिक्त साधन ही बना रहेगा, शिपिंग विंडो अभी भी केवल जुलाई के अंत से सितंबर के अंत तक ही चलती है। भारत के लिए, दांव अधिक जटिल हैं। नई दिल्ली आर्कटिक के खुलने में महज एक दर्शक नहीं है ,उसका अपना मार्ग भी विकासाधीन है, चेन्नई–व्लादिवोस्तोक ईस्टर्न मैरीटाइम कॉरिडोर, जो 2024 से चालू है, और जो भारतीय बंदरगाहों तथा रूस के सुदूर पूर्व के बीच पारगमन समय को 40 से अधिक दिनों से घटाकर लगभग 24 दिन कर चुका है। भारत ने इस कॉरिडोर को एनएसआर से खुद जोड़ने के लिए रूस के साथ नए समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं, रूसी संस्थानों के माध्यम से भारतीय नाविकों को ध्रुवीय नौवहन का प्रशिक्षण दिलाया है, स्वदेशी रूप से चार आइसब्रेकर–सक्षम जहाजों के निर्माण का आदेश दिया है, और आर्कटिक काउंसिल में पर्यवेक्षक की भूमिका पाने की महत्वाकांक्षा जताई है। रूसी अधिकारियों ने खुलेआम एनएसआर से जुड़ी अवसंरचना में भारतीय निवेश को आमंत्रित किया है, विश्लेषकों के अनुसार, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि मॉस्को नहीं चाहता कि उसका उत्तरी कॉरिडोर पूरी तरह चीनी पूंजी और यातायात पर निर्भर हो जाए। यही आखिरी बिंदु भारत के लिए अवसर है। क्षेत्रीय रणनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, नई दिल्ली की एनएसआर में भागीदारी का एक स्पष्ट कारण उस मार्ग पर चीनी प्रभुत्व को रोकना है जो भारत की अपनी ऊर्जा और व्यापारिक सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण धमनी बन सकता है, खासकर जब भारत, चीन की तरह, रूसी कच्चे तेल और कोयले की बढ़ती मात्रा आयात करता है, जो आर्कटिक से जुड़े कॉरिडोरों के जरिए तेजी से पहुंच सकती है। लेकिन भारत एक वास्तविक नुकसान की स्थिति से शुरुआत करता है, उसके पास चीन जैसी जहाज–निर्माण क्षमता नहीं है, उसका आइसब्रेकर बेड़ा अभी निर्माणाधीन है, परिचालन में नहीं, और चेन्नई–व्लादिवोस्तोक कॉरिडोर, हालांकि वास्तविक है, अभी तक उस तरह की साप्ताहिक, निर्धारित, बीमा–योग्य कंटेनर सेवा नहीं बना है ।

भारी वर्षा और धराशायी होती हरियाली

अरुण कुमार डनायक

भारतीय मानसून केवल ऋतु परिवर्तन का संकेत नहीं हैय यह जीवन और विनाश, दोनों का एक साथ आगमन है। वर्षा की रिमझिम फुहारें उमस से राहत देती हैं, खेतों में नई आशा जगाती हैं और और धरती को हरीतिमा की मनोहारी चादर पहना देती हैं। किंतु यही वर्षा जब अतिवृष्टि में बदल जाती है, तो जलभराव, बाढ़, भूस्खलन और वृक्षों के धराशायी होने जैसी घटनाएं जनजीवन को अस्त–व्यस्त कर देती हैं। पिछले कुछ वर्षों में एक चिंताजनक प्रवृत्ति विशेष रूप से सामने आई हैकृमहानगरों और नगरों में भारी वर्षा तथा तेज हवाओं के साथ बड़ी संख्या में वृक्षों का गिरना। दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद और अन्य शहरों में मानसून के दौरान सड़कों पर गिरे बरगद, पीपल, नीम, अर्जुन, गुलमोहर और यूकेलिप्टस के वृक्ष अब सामान्य दृश्य बन गए हैं। फुटपाथों और सड़क किनारे खड़े ये विशाल वृक्ष कभी छाया, स्वच्छ वायु और जैव विविधता के प्रतीक थेय आज वही यातायात अवरोधा, बिजली आपूर्ति बाधित होने और कभी–कभी जान–माल की हानि का कारण बन रहे हैं। यह समस्या केवल नगरों तक सीमित नहीं है। राजमार्गों पर भी वर्षों पुराने आम, इमली और जामुन के वृक्ष तेज वर्षा में गिरकर यातायात रोक देते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि वन क्षेत्रों के वृक्ष अपेक्षाकृत कम गिरते हैं। इससे स्पष्ट है कि समस्या वर्षा नहीं, बल्कि शहरी परिस्थितियां हैं। वृक्षों का असमय गिरना केवल बादलों या तेज हवाओं का दोष नहीं है। इसके पीछे पारिस्थितिक और प्रशासनिक दोनों प्रकार की विफलताएं छिपी हैं। शहरों में वृक्षों की जड़ों के चारों ओर सीमेंट और कांक्रीट बिछा दी जाती है, जिससे उन्हें फैलने और पर्याप्त ऑक्सीजन प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता। वर्षा का जल भी भूमि में समाने के बजाय नालियों में बह जाता है, परिणामस्वरूप जड़ों का प्राकृतिक पोषण बाधित हो जाता है। बहुमंजिला इमारतों, बेसमेंट, सीवेज लाइन, जल पाइपलाइन और भूमिगत केबलों के निर्माण के दौरान की जाने वाली अनियोजित खुदाई तथा ड्रिलिंग से जड़ें कट जाती हैं और वृक्ष भीतर ही भीतर कमजोर हो जाते हैं। अनेक पुराने वृक्ष दीमक और फफूंद के संक्रमण से खोखले भी हो चुके होते हैं। ऐसे वृक्ष जब तेज हवा और मूसलाधार वर्षा का संयुक्त दबाव झेलते हैं, तो उनका गिरना लगभग निश्चित हो जाता है। एक अन्य महत्वपूर्ण कारण अवैज्ञानिक छंटाई है। अनेक नगरों में वृक्षों की नियमित वैज्ञानिक छंटाई नहीं होती, जबकि कहीं–कहीं अत्यधिक छंटाई कर दी जाती है। कई बार मुख्य तना काट दिए जाने से वृक्ष सीधे ऊपर बढ़ने के बजाय एक ओर फैलने लगते हैं। ऊपर का भार बढ़ता जाता है, जबकि कांक्रीट में जकड़ी जड़ें उसे संभालने में असमर्थ रहती हैं। परिणामतरू तेज हवाओं में वृक्ष संतुलन खो बैठते हैं। वृक्ष गिरने के बाद नगर निगमों की चुनौतियां भी कम नहीं हैं। सीमित जनशक्ति और पुराने उपकरणों के कारण कई स्थानों पर आज भी कुल्हाड़ी और आरी से वृक्ष काटकर हटाए जाते हैं। परिणामस्वरूप सड़कें कई घंटों या कई दिनों तक बाधित रहती हैं। आधुनिक हाइड्रोलिक ट्री–कटर, क्रेन और मोबाइल वुड–चिपर जैसी मशीनों का उपयोग अभी भी अधिकांश भारतीय नगर निकायों में सामान्य नहीं हो पाया है। समस्या का एक कानूनी पक्ष भी है। दिल्ली सरकार ने जून 2025 में एक अधिसूचना जारी कर मृत, रोगग्रस्त अथवा जन–सुरक्षा के लिए खतरा बन चुके वृक्षों को हटाने की प्रक्रिया को सरल बनाने का प्रयास किया था।

लघुकथा

अपनी अपनी जिंदगी

कॉल बेल बजते ही जैसे ही रीना ने दरवाज़ा खोला, कंधे पर बैग थामे अनु माँ को देखते ही दौड़कर गले लग गई।

'और अनु, कैसी हो? कैसा रहा सफ़र?' माँ ने उसके हाथ से बैग लेते हुए पूछा।

'माँ, मैं ठीक हूँ। सुबह से ट्रेन में बैठे-बैठे थक गई हूँ। वैसे भी दिनभर ऑफिस करते-करते इतनी थकान हो जाती है कि क्या बताऊँ। अब एक हफ़्ते की छुट्टी में में खूब रेस्ट करूँगी और खूब सोऊँगी। बहुत थक गई हूँ।' पड़े सोफ़े पर धड़ाम से बैठ गई।

'ठीक है बेटा, आराम वगैरह तो कर लेना, किसने मना किया है? लेकिन मैंने सोचा था कि इस बार जब तुम घर आओगी तो तुम्हें कुछ किचन का काम सिखला दूँगी। भी कुछ आराम कर लूँगी और तुम्हारी भी प्रैक्टिस हो जाएगी। वैसे तुम्हारी उम्र भी हो रही है । लोग पूछते हैं कि अनु की शादी कब कर रही हो ?' रीना ने कहा।

माँ की बात सुनकर अनु गुस्से से चीख पड़ी, 'माँ, मैं तुम्हारी तरह ज़िंदगी नहीं काटूँगी। मुझे घर का काम थोड़ी न करना है। मुझे ज़रूरत होगी तो मैं नौकर रख लूँगी। जिसे मेरी इस शर्त पर शादी करनी हो, वो आए।'

'बेटा, अब बचपना छोड़ो। हर लड़की को घर तो बसाना ही पड़ता है, चाहे जॉब करो या मत करो। मेरे भी हाथ-पैर थक रहे हैं। पिताजी भी रिटायर हो गए। हम दोनों को भी सहारे की जरूरत है। सारी उम्र सास-ससुर की सेवा और तुम बच्चों को पालने में लगा दिया। शादी हो जाए तो हम लोग भी चैन से रह सकें।' रीना ने कहा।

'माँ, हमारी वजह से तुम्हें क्या दिक्कत है? मैं तो अपनी ज़िंदगी जी रही हूँ। यही हमारी ज़िंदगी है। शादी का नाम मत लेना। हाँ, कल ही एक नौकर आप दोनों की केयर के लिए कंपनी से ऑर्डर करती हूँ। अब आपको कोई काम नहीं करना।' कहते हुए अनु वॉशबेसिन में मुँह धोने के गई।

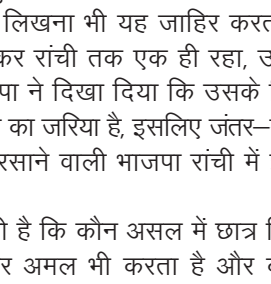

रचना सक्सेना
प्रयागराज

हे भगवान! यह आज की पीढ़ी कहाँ जा रही है, सोचते हुए वह किचन में चाय बनाने के लिए बढ़ गई।

झारखंड में सोरेन सरकार की सही पहल

नरेन्द्र मोदी जिस काम को नहीं कर सके, वो काम राहुल गांधी ने कर दिखाया। झारखंड में छात्र आंदोलन में राहुल गांधी के सार्थक हस्तक्षेप ने सकारात्मक राजनीति का रास्ता तैयार किया है। गौरतलब है कि झारखंड में 24 दिनों लंबा छात्र आंदोलन चला। आंदोलनकारियों की मांग थी कि झारखंड कर्मचारी चयन आयोग की संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा को रद्द किया जाए, क्योंकि इसमें बड़े पैमाने पर गड़बड़ी हुई है। छात्रों ने पेपर लीक के साथ–साथ ओएमआर शीट में धांधली, अयोग्य एजेंसियों को परीक्षा का ठेका देना और कट–ऑफ जारी न करने के आरोप भी लगाए। छात्र नेता देवेंद्रनाथ महतो समेत कुछ आंदोलनकारियों ने अनशन भी किया था। जंतर–मंतर पर हुए सफल आंदोलन के ठीक बाद झारखंड में आंदोलन खड़ा हुआ तो जाहिर तौर पर देश की निगाहें वहां गईं। देखते ही देखते आंदोलन ने बड़ा रूप ले लिया। झारखंड में चूंकि झारखंड मुक्ति मोर्चा और कांग्रेस की गठबंधन सरकार है, तो दिल्ली में मात खाई भाजपा को एक बड़ा अवसर मिल गया कि वह रांची में हिसाब–किताब बराबर कर ले। लेकिन राहुल गांधी की सूझबूझ और दूरदृष्टि ने भाजपा के इस खेल को भी खराब कर दिया। राहुल गांधी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से प्रदर्शनकारियों से श्यक्तिगत रूप से मिलनेश का सुझाव देते हुए एक पत्र लिखा। इसमें राहुल गांधी ने उल्लेख किया कि राज्य सरकार द्वारा समिति का गठन कर बातचीत शुरू करना सराहनीय है, लेकिन फिर भी कुछ छात्र अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर हैं। ऐसे में सरकार को छात्रों के साथ खड़े होना चाहिए। राहुल गांधी ने 14 अगस्त को लिखे अपने पत्र में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से अपील की कि वे प्रदर्शनकारी छात्रों के प्रतिनिधियों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात करें ताकि उनकी बची हुई समस्याओं का समाधान हो सके। राहुल ने कहा था कि संविधान में शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन का अधिकार लोकतंत्र का एक मुख्य स्तंभ है। झारखंड के युवाओं का यह आंदोलन पूरी तरह से शांतिपूर्ण है और उनकी मांगें जायज हैं। यह पत्र 17 तारीख को सार्वजनिक चर्चा में आया और उसी रात मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने घोषणा की कि झारखंड कर्मचारी चयन आयोग यानी जेएसएससी की संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा को रद्द कर दिया गया है। इसके साथ ही परीक्षा कराने वाली एजेंसी टीएसआर डेटा प्रोसेसिंग प्रा.लि. (टीडीपीएल) के माध्यम से हुई सभी भर्तियां और उनके परिणाम भी निरस्त कर दिए गए हैं। मुख्यमंत्री ने यह भी ऐलान किया कि 2014 से टीडीपीएल के जरिए आयोजित सभी परीक्षाओं की सीआईडी जांच कराई जाएगी, जबकि परीक्षा में हुई गड़बड़ियों की जांच के लिए एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में अलग जांच समिति बनाई जाएगी। इस फैसले के बाद देवेंद्रनाथ महतो ने अपनी भूख हड़ताल खत्म कर दी है। हेमंत सोरेन ने माना कि सरकार के पास परीक्षा कराने के लिए पहले से स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर यानी एसओपी मौजूद था, लेकिन उसका सही तरीके से पालन नहीं किया गया। उन्होंने कहा, हमारे पास एसओपी पहले से था, लेकिन उसका पालन नहीं हुआ। इसी वजह से हाल के वर्षों में परीक्षाओं में गड़बड़ियां आईं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि भविष्य में परीक्षा प्रणाली को पूरी पारदर्शिता के साथ सुधारा जाएगा। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि सरकार ने छात्रों की शिकायतें दर्ज करने के लिए एक विशेष ऑनलाइन पोर्टल भी शुरू किया है। इस पोर्टल पर आने वाली शिकायतों को जांच कर रही विशेषज्ञ समिति के साथ साझा किया जाएगा ताकि परीक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार किए जा सकें। हेमंत सोरेन ने कहा कि छात्रों के हित में उनकी सरकार पहले ही पेपर लीक रोकने के लिए कानून बना चुकी है। उन्होंने कहा कि अब परीक्षा व्यवस्था को पूरी तरह पारदर्शी बनाने के लिए और भी सुधार किए जाएंगे ताकि भविष्य में इस तरह की शिकायतें दोबारा सामने न आएं। किसी भी सरकार के मुखिया को व्यवस्था में सुधार की जो बातें कहना चाहिए, वही सब हेमंत सोरेन ने कही हैं। हालांकि परीक्षा माफिया देश की व्यवस्था में इतने गहरे तक जड़ें जमा चुका है कि उसे एकदम से खत्म करना आसान नहीं होगा। इस भ्रष्टाचार में करोड़ों–अरबों का हेर–फेर होता है, और एक साथ कई लोग इसमें संलिप्त रहते हैं। इसलिए इससे वही सरकार सख्ती से निपट सकती है जो बिल्कुल दबाव में न आए और अपने सख्त फैसलों पर कायम रहे। निकट भविष्य में हेमंत सोरेन इस कसौटी पर कितने खरे उतरते हैं, यह देखना होगा। लेकिन अभी कम से कम उन्होंने राहुल गांधी की बात सुनकर सही फैसला लिया है। आंदोलनकारी छात्र सरकार से लगातार अपनी नाराजगी दिखा रहे थे। इस आग में घी डालने का काम भाजपा उसके सहयोगी संगठन और साथी मीडिया अच्छे से कर रहा था। आंदोलन के शुरु से राहुल गांधी का नाम लेकर पूछा जा रहा था कि वे रांची क्यों नहीं आते और क्यों आंदोलनकारियों का साथ नहीं देते। हालांकि राहुल गांधी ने आंदोलनकारी छात्रों से फोन पर बात की थी और जब झारखंड पुलिस ने उन पर लाठी चार्ज किया तो उसकी निंदा भी की थी। राहुल गांधी ने लगातार छात्रों के हक में बात की और उनका चिक्की लिखना भी यह जाहिर करता है कि उनका रवैया दिल्ली से लेकर रांची तक एक ही रहा, उसमें बदलाव नहीं आया। मगर भाजपा ने दिखा दिया कि उसके लिए छात्र आंदोलन भी केवल राजनीति का जरिया है, इसलिए जंतर–मंतर पर प्रदर्शनकारियों पर लाठी बरसाने वाली भाजपा रांची में इसी बात पर सवाल उठा रही थी।

बहरहाल, जनता भी देख रही है कि कौन असल में छात्र हितों की बात करता है और उस पर अमल भी करता है और कौन केवल जुबानी जमाखर्च करता है।

सीजेपी के विरोध प्रदर्शन पर अब क्यों सुरेश ओबेरॉय ने उठाए सवाल ? बॉलीवुड सेलेब्स को भी दिखाया आइना

कॉकरोच जनता पार्टी के विरोध प्रदर्शन को सोनाक्षी सिन्हा, शबाना आजमी और प्रकाश राज, विशाल डडलानी समेत कई बॉलीवुड कलाकरों ने समर्थन दिया था। कुछ सोशल मीडिया पर सपोर्ट कर रहे थे तो कुछ दिल्ली के जंतर–मंतर पर पहुंचे थे। हाल ही में सुरेश ओबेरॉय ने इस मामले पर बात की है। उन्होंने कलाकारों के इस समर्थन पर सवाल उठाए हैं। निधि वसंदानी के पॉडकास्ट में सुरेश ओबेरॉय कहते हैं, ‘हम जिम्मेदार लोग हैं। दुनिया आपकी बात सुनती है और आप जो कहते हैं, उसे मानती है। कुछ भी बोलने से पहले, आपको रिसर्च करनी चाहिए, देखना और समझना चाहिए कि इसके पीछे कौन है, कौन–कौन शामिल है। क्या वह सभी नीट छात्र हैं या उनमें राजनेता, पत्थर फेंकने वाले या हंगामा करने वाले लोग शामिल हैं? जब तक आपको पता न हो, आप इतनी मुखरता से कैसे बोल सकते हैं?’ वह सीजेपी की फंडिग पर भी सवाल करते हैं। वह कहते हैं, ‘मैं कभी किसी विरोध प्रदर्शन में शामिल नहीं हो सकता। मेरा काम एक्टिंग करना है, इसलिए मैं एक्टिंग करूंगा। एक्टिविस्ट बनने का क्या मतलब है? किसी भी चीज की मांग करने का एक तरीका होता है। यह कैसा तरीका है? मुझे यह पसंद नहीं है।’ वह आगे कहते हैं, ‘रातों–रात स्टार बनना चाहते हैं, इसलिए पत्थर फेंकते हैं और स्टार बन जाते हैं। पुलिस पर हमला करना बिल्कुल बेतुका है। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।’ सुरेश ओबेरॉय साल 2023 में फिल्म ‘एनिमल’ में नजर आए थे, वह रणबीर कपूर के दादा के रोल में दिखे थे। आज रिलीज हुई फिल्म ‘खलीफा’ भी वह नजर आए हैं, इस मलयालम फिल्म में पृथ्वीराज सुकुमारन और मोहनलाल ने अहम भूमिका निभाई है।

> “ क्या वह सभी नीट छात्र हैं या उनमें राजनेता, पत्थर फेंकने वाले या हंगामा करने वाले लोग शामिल हैं? जब तक आपको पता न हो, आप इतनी मुखरता से कैसे बोल सकते हैं?’

सोनम कपूर ने ब्लैक साड़ी में ढाया कहर, डायमंड नेकलेस से लेकर बालों तक...हर अंदाज पर फिदा हुए फैंस

एक्ट्रेस और फैशन आइकन सोनम कपूर बुधवार को मुंबई में एक लग्जरी ज्वेलरी शोकेस में शानदार अंदाज में नजर आईं। एक्ट्रेस एक शानदार ब्लैक साड़ी और उसके साथ खास ज्वेलरी पहने हुए सबका ध्यान अपनी ओर खींच रही थीं।इस इवेंट के लिए सोनम ने एक ब्लैक साड़ी चुनी, जिसके बॉर्डर और पल्लू पर बारीक मेटैलिक–गोल्ड का काम था। साड़ी पर सुनहरे और भूरे रंग के शेड्स में पारंपरिक कढ़ाई वाले मोटिफ्स भी बने थे। उन्होंने इसके साथ एक ब्लैक ब्लाउज पहना था, जिसकी स्लीव्स पर सुनहरी धारियों वाली डिटेलिंग थी। एक्ट्रेस ने अपने लुक को और खास बनाने के लिए डायमंड और जेमस्टोन जड़ा हुआ एक बड़ा नेकलेस, मैचिंग इयररिंग्स और शानदार अंगूठियां पहनी थीं। बालों के लिए उन्होंने उन्हें पीछे की तरफ एक स्लीक बन में बांध ा और साथ में ड्यूई मेकअप लुक अपनाया। सोनम की बात करें तो, पिछले कुछ सालों में उन्होंने फैशन की दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। फैशन के साथ उनका रिश्ता उनकी बहन रिया कपूर से गहराई से जुड़ा रहा है, जिन्होंने अक्सर बड़े पब्लिक इवेंट्स के लिए उन्हें स्टाइल किया है। जो लोग नहीं जानते, उन्हें बता दें कि रिया एक फिल्म प्रोड्यूसर, फैशन डिजाइनर और स्टाइलिस्ट हैं। खासकर आयशा फिल्म सोनम के फैशन और फिल्मी सफर का एक अहम हिस्सा बन गई। 2010 में रिलीज हुई इस रोमांटिक कॉमेडी फिल्म में उन्होंने मुख्य किरदार निभाया था– एक ऐसी युवा महिला जो फैशन और सोशल लाइफ में बहुत दिलचस्पी रखती थी। यह फिल्म बॉलीवुड में सोनम के शुरुआती दिनों में उनके बदलते फैशन इमेज से भी गहराई से जुड़ गई थी। अभिनय के मोर्चे पर, सोनम ने 2007 में संजय लीला भंसाली की फिल्म सांवरिया से अपना करियर शुरू किया। उन्होंने दिल्ली –6, आई हेट लव स्टोरीज, आयशा, रांझणा, भाग मिल्खा भाग, खूबसूरत, नीरजा, प्रेम रतन धन पायो, वीरे दी वेडिंग, संजू, एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा, द जोया फैक्टर और एके बनाम एके सहित कई फिल्मों में काम किया। नीरजा में उनके प्रदर्शन ने उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार दिलाया। व्यक्तिगत मोर्चे पर, सोनम ने मई 2018 में व्यवसायी आनंद आहूजा से शादी की। इस जोड़े ने अगस्त 2022 में अपने पहले बेटे, वायु का स्वागत किया। मार्च 2026 में, उन्होंने अपने दूसरे बेटे, रुद्रलोक का स्वागत किया।

बंटवारा 1947 को क्यों नहीं मिल रहे थे निवेशक ? निर्देशक ने बताई वजह, सनी देओल के रोल से जुड़ा है मामला

बंटवारा 1947 के निर्देशक राजकुमार संतोषी ने बताया है कि उन्हें अपनी फिल्म के लिए इन्वेस्टर्स ढूंढने में काफी मुश्किल हुई। इसकी वजह यह थी कि यह फिल्म बंटवारे के दौर पर आधारित है। इसमें सनी देओल एक मुस्लिम किरदार निभाया है। संतोषी ने कहा कि इस प्रोजेक्ट में दिलचस्पी रखने वाले कई फाइनेंसर चाहते थे कि एक्टर पारंपरिक एक्शन रोल करें। फिल्ममेकर ने यह भी साफ किया कि कुछ रिपोर्ट्स और रिव्यू के उलट, देओल फिल्म में पाकिस्तानी किरदार नहीं निभा रहे हैं। इसके बजाय, वह एक ऐसे भारतीय मुस्लिम का किरदार निभा रहे हैं, जिसे बंटवारे के दौरान खुद को और अपने परिवार को बचाने के लिए पाकिस्तान जाने पर मजबूर होना पड़ा। संतोषी ने गलाटा इंडिया से बातचीत में बताया कि हालांकि इन्वेस्टर्स सनी देओल के साथ उनके कोलेबोरेशन को लेकर उत्साहित थे। मगर वे चाहते थे कि फिल्ममेकर वैसी ही एक्शन फिल्में बनाएं जैसी उनकी पिछली फिल्में घायल, दामिनी और घातक थीं।

संतोषी ने बताया कि मुंबई में ज्यादातर इन्वेस्टर्स को जब पता चला कि सनी देओल और मैं एक फिल्म कर रहे हैं, तो वे चाहते थे कि मैं एक रेगुलर एक्शन फिल्म बनाऊं। वे ऐसी फिल्म के लिए तैयार नहीं थे जिसमें सनी एक मुस्लिम किरदार निभा रहे हों। जब इन्वेस्टर्स को पता चला कि देओल बंटवारे पर आधारित ड्रामा में एक मुस्लिम व्यक्ति के तौर पर गंभीर भूमिका निभाएंगे, तो उन्होंने बंटवारा 1947 को फंड देने से इनकार कर दिया। संतोषी ने कहा कि देओल ने पहले भी मुस्लिम किरदार निभाए होंगे, लेकिन इस फिल्म में उनका किरदार मिजाज और ट्रीटमेंट के मामले में अलग है। फिल्ममेकर ने कहा कि किरदार का सफर ही फिल्म का मुख्य हिस्सा है और उसे सिर्फ पाकिस्तानी कहना उसके बैकग्राउंड और हालात को कमतर आंकने जैसा होगा। उन्होंने कहा, यह हमारे लिए एक बड़ी समस्या बन गईय इन्वेस्टर्स इतना साहसी और जोखिम भरा विषय नहीं चुनना चाहते थे। आजकल ऐसा माहौल बन गया है कि अगर आप पाकिस्तान का नाम भी लें, तो आपको देश–विरोध ी मान लिया जाता है। संतोषी ने बताया श्आमिर को इस बारे में पता था। वे बहुत सहयोगी थे और उन्होंने कहा कि अगर कोई और प्रोड्यूस नहीं करेगा, तो वे इसे प्रोड्यूस करेंगे। फिल्म निर्माता ने आगे बताया कि टीम ने अलग–अलग प्रोड्यूसर्स से संपर्क किया और सनी देओल ने भी फाइनेंस का इंतजाम करने की कोशिश की। लेकिन यह मुद्दा इन्वेस्टर्स के लिए एक रुकावट बना रहा।

आयुष्मान खुराना ने जालना में बच्चों की सुरक्षा और शिक्षा पर दिया जोर

यूनिसेफ इंडिया के राष्ट्रीय एम्बेसडर आयुष्मान खुराना ने महाराष्ट्र के जालना का दौरा किया, जहां उन्होंने सीजनल माइग्रेशन से प्रभावित बच्चों, किशोरियों, परिवारों और समुदाय के सदस्यों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने परिवार और समुदाय आधारित देखभाल की अहमियत को समझा और बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य और मानसिक कल्याण से जुड़े मुद्दों पर बातचीत की। आयुष्मान ने कहा, ”किसी भी बच्चे को अपनी परिस्थितियों के कारण अपना बचपन नहीं खोना चाहिए।“ उन्होंने बताया कि जालना में उन्होंने देखा कि समुदाय किस तरह मिलकर प्रवास से प्रभावित बच्चों को परिवार, देखभाल और सहयोग से जोड़े रखने का काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि किनशिप केयर सिर्फ बच्चों को सुरक्षित घर देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके रिश्तों को बनाए रखने, आत्मविश्वास बढ़ाने और बेहतर भविष्य की उम्मीद देने में भी मदद करता है। दौरे के दौरान आयुष्मान ने बालमित्रों और युवा कम्युनिटी लीडर्स से भी मुलाकात की। उन्होंने 18 वर्षीय शिल्पा का उदाहरण देते हुए बताया कि वह पहले अपने परिवार के साथ सीजनल माइग्रेशन करती थीं, लेकिन अब स्कूल पूरा करने के बाद वोकेशनल कोर्स में दाखिला ले चुकी हैं। आयुष्मान ने कहा कि जब बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षित माहौल मिलता है, तो लड़कियां अपने सपनों को पूरा कर सकती हैं और माइग्रेशन के पीढ़ीगत चक्र को तोड़ सकती हैं। जालना में यूनिसेफ, महाराष्ट्र सरकार, जिला प्रशासन और एनजीओ साझेदारों के सहयोग से किनशिप और कम्युनिटी केयर कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य बच्चों को स्कूल से जोड़े रखना और उन्हें स्वास्थ्य, पोषण व मनोसामाजिक सहयोग जैसी सेवाओं तक पहुंच दिलाना है। आयुष्मान ने कहा कि ”हर बच्चे का अधिकार है कि वह सुरक्षित, प्यार भरे और पोषण देने वाले पारिवारिक वातावरण में बड़ा हो।“ यूनिसेफ के मुताबिक, 2024–25 में 5,800 से अधिक बच्चे किनशिप केयर में बने रहे, जबकि उनके माता–पिता सीजनल काम के लिए प्रवास कर गए थे।

मिर्जापुर द मूवी’ के प्रमोशन के लिए पंकज त्रिपाठी उर्फ कालीन भैया लौटे शहर, फिर दिखेगा भौकाल

मिर्जापुर द मूवी’ को लेकर फैंस के बीच एक्साइटमेंट लगातार बढ़ती जा रही है। 11 अगस्त को रिलीज हुए फिल्म के मच अवेटेड ट्रेलर को दर्शकों का जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला है। ट्रेलर में बड़े भौकाल, गद्दी की जंग और ‘मिर्जापुर’ की दमदार दुनिया की झलक देखने के बाद अब फिल्म को लेकर बज और भी बढ़ गया है। ट्रेलर को मिले इस शानदार रिस्पॉन्स के बीच फिल्म की स्टारकास्ट 22 अगस्त को लखनऊ पहुंची। अली फजल, दिव्येंदु शर्मा और जितेंद्र कुमार ने शहर में फिल्म का प्रमोशन किया और मीडिया से बातचीत की। मिर्जापुर’ की कहानी और इसकी दुनिया का उत्तर प्रदेश से खास कनेक्शन रहा है। ऐसे में लखनऊ में फिल्म का प्रमोशन करना टीम के लिए भी खास रहा। जिसके बाद अब ‘मिर्जापुररू द मूवी’ के स्टार्स पंकज त्रिपाठी, अली फजल, दिव्येंदु शर्मा और जितेंद्र कुमार 22 अगस्त 2026 को पटना का दौरा करेंगे। ट्रेलर और पहले गाने ‘दो नंबरी’ को मिले शानदार रिस्पॉन्स के बाद अब फिल्म की रिलीज को लेकर दर्शकों की एक्साइटमेंट अपने चरम पर है। फिल्म की स्टारकास्ट में अली फजल, पंकज त्रिपाठी, दिव्येंदु शर्मा, अभिषेक बनर्जी, रसिका दुगल, मोहित मलिक, शीबा चड्ढा, राजेश तैलंग, प्रमोद पाठक, श्रिया पिलगांवकर, हर्षिता शेखर गौर, श्वेता त्रिपाठी और सोनल एस. चौहान भी शामिल हैं।‘मिर्जापुर द मूवी’ का निर्देशन गुरमीत सिंह ने किया है और इसकी कहानी पुनीत कृष्णा ने लिखी है। फिल्म को अमेजन डळड स्टूडियोज और एक्सेल एंटरटेनमेंट प्रस्तुत कर रहे हैं। रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर ने इसे एक्सेल एंटरटेनमेंट के बैनर तले प्रोड्यूस किया है। फिल्म 4 सितंबर 2026 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में हिंदी और तेलुगु में रिलीज होगी।

शरीर में पानी की कमी के हैं ये लक्षण, समय रहते संभल जाएं वरना होगा नुकसान

पानी शरीर के लिए बहुत जरूरी होता है। अगर आप कम मात्रा में पानी पीते हैं तो कई सारी बीमारियों के पैदा होने का डर रहता है। क्योंकि पानी शरीर से टॉक्सिंस को आसानी से बाहर निकालने में मदद करता है। साथ ही शरीर के सारे बॉडी पार्टस भी स्मूदली वर्क कर पाते हैं। पानी की कमी से दिल की सेहत पर बुरा असर पड़ता है। वहीं यूरिन इंफेक्शन, कब्ज, इनडाइजेशन की समस्या बढ़ जाती है। वहीं चेहरे पर एक्ने भी पानी की कमी से दिखते हैं। कई बार शरीर में पानी की कमी तो होती है लेकिन उसे हम समझ नहीं पाते। ऐसे में शरीर में दिख रहे इन लक्षणों समझें कि आप है डिहाइड्रेशन के शिकार।

यूरिन का कलर

अगर आपको खुलकर यूरिन नहीं हो रही और यूरिन का कलर पीलापन लिए है। तो ये आपके शरीर में पानी की कमी का संकेत है। जरूरी है कि पानी पीने की मात्र को बढ़ा दिया जाए।

मुंह से बदबू

पानी की कमी की वजह से मुंह में लार कम बनती है और मुंह से बदबू आती है। दांतों और मुंह की सफाई के बाद भी मुंह बदबू करता है तो पानी ज्यादा पीना शुरू करें।कद

स्किन और होंठ ड्राई

अगर स्किन हमेशा ड्राई रहती है और होंठ के आसपास का हिस्सा सूखा सा लगता है तो शरीर में पानी की कमी है। इसे पूरा करने के लिए लिक्विड और पानी की मात्रा को बढ़ा दें।

कमजोरी और सुस्ती

डिहाइड्रेशन की वजह से ब्लड प्रेशर लो हो जाता है। जिसकी वजह से थकान और सुस्ती लगती है और सिर चकराता है। इसलिए सुस्ती और सिर चकराने पर पानी पीना बेहद जरूरी होता है।

नींद ज्यादा लगना और थकान

अगर आपको बहुत ज्यादा थकान महसूस हो रही है और नींद आ रही है तो ये शरीर में पानी की कमी का संकेत है। डिहाड्रेशन को दूर करने के लिए लिक्विड और पानी ज्यादा मात्रा में पिएं।

मसल्स क्रैंप

पानी की कमी और डिहाइड्रेशन की वजह से इलेक्ट्रोलाइट बैलेंस बिगड़ जाता है और मसल्स में क्रैंप होता है। ये सिचुएशन भी डिहाइड्रेशन की निशानी है।

पॉजिविटी भी बदल जाएगी नेगेटिविटी में, अगर गलत जगह होगा फिश एक्वेरियम !

हिंदू धर्म में वास्तु शास्त्र के नियमों का महत्व है। मान्यता है कि घर में रखी हर एक चीज की एक एनर्जी होती है चाहे चवेपजपअम हो या दमहंजपअम। इसका असर घर में मौजूद लोगों की जिंदगी पर भी पड़ता है। वहीं वास्तु शास्त्र के नियमों के हिसाब से घर में फिश एक्वेरियम रखना बहुत शुभ माना जाता है। कहते हैं कि इससे घर में खुशहाली आती है। फिश एक्वेरियम घर की सुंदरता में चार– चांद लगा देते हैं। उनमें रखी सुंदर रंगीन मछलियां देखकर मन को सुकून मिलता है। ऐसा भी माना जाता है कि ये मछलियां घर के सदस्यों पर आ रहे संकटों को टाल देती है। वहीं घर में एक्वेरियम रखने में धन में वृद्धि होती है। बता दें कि हिंदू धर्म में मछली यानी की मत्स्य को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है, इसलिए भी लोग इसे घर में रखते हैं ताकि भगवान विष्णु का आशीर्वाद मिल। वहीं कई लोग घर से बाहर जाते हुए भी मछली के दर्शन करने को शुभ मानते हैं। लेकिन घर में एक्वेरियम रखा है तो कुछ वास्तु नियमों पर ध्यान देना बहुत जरुरी है। आइए आपको बताते हैं इसके बारे में....

कितनी मछलियां हो फिश टैंक में

वास्तु के अनुसार ऊर्जा के सकारात्मक प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए आपको अपने फिश टैंक या एक्वेरियम में 9 मछलियां रखनी चाहिए। लेकिन साथ ही, यह भी सुनिश्चित करें कि आपको एक ऐसा टैंक रखना चाहिए जिसमें मछलियों को तैरने के लिए पर्याप्त स्थान मिल सके। कभी भी क्षमता के कम जगह वाला एक्वेरियम घर में न रखें।

किस दिशा में हो फिश टैंक

एक्वेरियम में बहता पानी प्रगति को दर्शाता है। वास्तुशास्त्र में पानी की दिशा उत्तरपूर्व है। घर का उत्तरी भाग करियर को प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए जब भी एक्वेरियम रखें तो उसे पूर्व या उत्तरपूर्व दिशा में रखें। उत्तर पूर्व दिशा में एक्वेरियम शुभ परिणाम देता है। इस दिशा में रखा एक्वेरियम पॉजिटिव एनर्जी का फ्लो करता है, जिससे जीवन में शांति और खुशहाली बनी रहती है। एक्वेरियम को मेन गेट के बाईं दिशा में रखनी चाहिए, जिससे आने जाने वाले की नजर पड़े।

इस रंग की मछली होती है शुभ

काले रंग की मछली को एक खास महत्व होता है। माना जाता है कि काले रंग की मछली सुरक्षा का प्रतीक होती है। काली मछली घर की नकारात्मक ऊर्जा को मिटाती है। अपने काले रंग के कारण वो घर की नेगेटिव एनर्जी को खुद की ओर आकर्षित करती है, माहौल में फैली नेगेटिव एनर्जी को खुद में सोखकर वातावरण को सकारात्मक बनाती है। इस कारण अक्सर कई बार काली मछली की मौत जल्दी हो जाती है। किसी भी मछली के मरने के तुरंत बात उसकी जगह नई मछली रखने की सलाह दी जाती है।

एक्वेरियम से जुड़े अन्य वास्तु टिप्स

– अगर आपने लिविंग रुम में एक्वेरियम रखा है तो इसे दक्षिण– पश्चिम दिशा में रखें ताकि आगंतुकों की नजर सीधे उस पर पड़े। जैसे घर के पूर्वमुखी है तो आंगतुकों की नजर लिविंग रुम के सीधे वेस्ट कॉर्नर पर पड़ेगी। अगर नहीं तो आप इसे उत्तर दिशा में रखें।

– एक्वेरियम को लिविंग रुम के बजाए कहीं और रखना चाहते हो तो उत्तर दिशा में रखें। एक्वेरियम को कभी भी बेडरुम या किचन में नहीं रखना चाहिए।

– एक्वेरियम गोल या आयातकार ज्यादा अच्छा होता है और इसे साफ करना भी आसान होता है।

– एक्वेरियम के पानी को साफ रखें और बदलते रहें। इस बात का भी ध्यान रखें कि पानी का फ्लो बना रहे, स्थिर पानी घर के उन्नति में बाधक बनता है।

सिर्फ पानी पीकर भी घट सकता है वजन? जानिए इससे जुड़े तथ्यों की सच्चाई

अक्सर दावा किया जाता है कि यदि आप अपना वजन कम करने का प्रयास कर रहे हैं, तो एक चीज जो आपको प्रतिदिन करनी चाहिए वह है खूब सारा पानी पीना। कुछ इंटरनेट सलाह में तो यह भी कहा जाता है कि यह लगभग 4.5 लीटर जितना होना चाहिए। दावा यह है कि पानी कैलोरी जलाने और भूख कम करने में मदद करता है, जिससे वजन कम होता है। हालांकि हम सभी चाहते हैं कि वजन कम करना आसान होता, दुर्भाग्य से इन दावों का समर्थन करने के लिए बहुत कम सबूत हैं।

मिथक 1

पानी कैलोरी जलाने में मदद करता है चौदह युवाओं पर किए गए एक छोटे अध्ययन में पाया गया कि 500 मिलीलीटर पानी पीने से विश्राम ऊर्जा व्यय (व्यायाम से पहले हमारे शरीर द्वारा उपयोग की जाने वाली कैलोरी की मात्रा) में लगभग 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई। हालांकि यह प्रभाव केवल एक घंटे तक रहा। आठ युवाओं ने एक अन्य अध्ययन में ऊर्जा व्यय में वृद्धि देखी गई जब पानी फ्रिज में ठंडा किया हुआ था, इस तरह से खर्च होने वाली कैलोरी में बहुत मामूली 4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। ऐसा संभवतरू इसलिए हो सकता है क्योंकि शरीर को पानी को शरीर के तापमान तक लाने के लिए अधिक ऊर्जा का उपयोग करने की आवश्यकता होती है, या क्योंकि शरीर को तरल पदार्थ की बढ़ी हुई मात्रा को गुर्दे के माध्यम से फिल्टर करने के लिए अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। फिर, यह प्रभाव केवल लगभग एक घंटे तक ही देखा गया। इसलिए यद्यपि वैज्ञानिक रूप से यह संभव हो सकता है, लेकिन खर्च होने वाली कैलोरी में वास्तविक शुद्ध वृद्धि बहुत कम है।

मिथक 2

भोजन के साथ पानी पीने से भूख कम हो जाती है यह दावा फिर से तर्कसंगत लगता है, यदि आपका पेट कम से कम आंशिक रूप से पानी से भरा है तो भोजन के लिए कम जगह होगी– इसलिए आप कम खाते हैं। कई अध्ययनों में वास्तव में इसका समर्थन किया गया है, विशेष रूप से मध्यम आयु वर्ग और अधेड़ों पर किए गए अध्ययनों में। यह भी एक कारण है कि जो लोग अस्वस्थ होते हैं या जिन्हें भूख कम लगती है उन्हें खाने से पहले पानी न पीने की सलाह दी जाती है क्योंकि इससे कम खाने की समस्या हो सकती है।

भोजन से पहले पानी से भी कम हो सकता है वजन

एक अध्ययन से पता चला है कि भोजन से पहले पानी पीने वाले मध्यम आयु वर्ग और अधेड़ व्यक्तियों का वजन 12 सप्ताह की अवधि में 2 किलोग्राम कम हो गया, उन लोगों की तुलना में जो भोजन के साथ पानी नहीं पीते थे। दूसरी ओर, युवाओं (21–35 वर्ष की आयु) का वजन कम नहीं हुआ, भले ही उन्होंने भोजन से पहले पानी पिया हो या नहीं। इस तरह के कई शोध के साथ दूसरी चुनौती यह है कि यह केवल इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि क्या प्रतिभागी पानी पीने के बाद अपने दिन के भोजन में से केवल एक के दौरान कम खाते हैं। शायद यह हमारे शरीर की अपना आकार बनाए रखने की जैविक इच्छा के कारण है। हालांकि चूंकि पानी एक तरल पदार्थ है, यह हमारे पेट से तेजी से खाली हो जाता है।

ज्यादा पानी पीने के बाद नहीं लगती भूख

दिलचस्प बात यह है कि पेट के आकार के कारण, तरल पदार्थ पेट के निचले हिस्से में पचने वाले किसी भी अर्ध–ठोस भोजन सामग्री को बायपास कर सकते हैं। इसका मतलब है कि पानी अभी भी पेट से जल्दी खाली हो सकता है। इसलिए भले ही इसका सेवन भोजन के अंत में किया जाए, लेकिन जरूरी नहीं कि यह आपकी परिपूर्णता भावनाओं को बढ़ाए। यदि आप कम खाने और वजन कम करने की कोशिश कर रहे हैं, तो अधिक मात्रा में पानी पीना कोई अच्छा समाधान नहीं हो सकता। हालांकि इस बात के प्रमाण हैं कि जब पानी को अन्य पदार्थों (जैसे फाइबर, सूप या वनस्पति सॉस) के साथ मिलाया जाता है, तो यह पेट द्वारा सामग्री को खाली करने की प्रक्रिया को धीमा कर सकता है, इसका अर्थ है कि आप लंबे समय तक भरा हुआ महसूस करते हैं। हालांकि पानी आपको सीधे तौर पर वजन कम करने में मदद नहीं कर सकता, फिर भी यह वजन घटाने में मदद कर सकता है, क्योंकि यह सबसे स्वास्थ्यवर्धक पेय है जिसे हम चुन सकते हैं। सोडा और अल्कोहल जैसे उच्च–कैलोरी पेय को पानी से बदलना आपके द्वारा प्रतिदिन उपभोग की जाने वाली कैलोरी को कम करने का एक आसान तरीका हो सकता है, जो वजन घटाने में मदद कर सकता है।

एक्सपर्ट्स की सलाह के बिना रोजाना न करें इस चाय का सेवन, सेहत पर पड़ सकता है भारी

हर भारतीय किचन में आपको कई ऐसे मसाले मिल जाएंगे, जो सेहत संबंधी समस्याओं को दूर करने में मददगार होते हैं। स्किन को ग्लोइंग बनाने से लेकर डाइजेशन तक हमारे किचन में कई तरह के नुस्खे मौजूद होते हैं। अजवाइन, मेथी, जीरा और दालचीनी आदि कई ऐसे मसाले हैं, जो स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को दूर करने में हमारी मदद करते हैं। लेकिन इसके लिए इन मसालों के सही इस्तेमाल का तरीका पता होना बहुत जरूरी है। क्योंकि अगर आपको इनके इस्तेमाल के तरीके के बारे में नहीं पता होगा, तो आपको फायदे की जगह नुकसान भी हो सकता है।

ऐसे में अगर आप मेथी दाने की बात करते हैं तो इससे सेहत को कई फायदे मिलते हैं। मेथी की चाय सेहत के लिए काफी अच्छी मानी जाती है। कई हेल्थ कंडीशन्स में मेथी की चाय पीने की सलाह दी जाती है। लेकिन अगर आपके मन में भी यह सवाल है कि क्या रोजाना मेथी की चाय का सेवन सही है या नहीं। तो बता दें कि यह आर्टिकल आपके लिए है। इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि मेथी की चाय आपकी सेहत के लिए कितनी फायदेमंद होती है।

इस चाय के फायदे

कई बीमारियों में मेथी दाने की चाय आपको फायदा पहुंचा सकती है। बता दें कि मेथी दानों में प्रोटीन, कार्ब्स, फैट, आयरन, फाइबर और मैग्नीशियम पाया जाता है। इस चाय के सेवन से डाइजेशन सुधारने, ब्लड शुगर को मैनेज करने और जोड़ों के दर्द में राहत मिलती है। इसे बनाने के लिए 1 टीस्पून मेथी दानों को आधा कप पानी में उबाल लें। अच्छे से उबालने के बाद इसे छान लें। इस चाय को पीना लाभकारी होता है। लेकिन चाय के सेवन के दौरान इसकी मात्रा का ख्याल रखना जरूरी है। मेथी दानों का सेवन सीमित मात्रा में ही फायदेमंद होता है।

रोजाना पी सकते हैं मेथी दाने की चाय

इस बात में कोई दोराय नहीं है कि मेथी दाने की चाय फायदेमंद होती है। लेकिन एक्सपर्ट्स के अनुसार, इसका रोजाना सेवन सही है या नहीं, यह व्यक्ति की सेहत पर निर्भर करता है। कुछ हेल्थ कंडीशन में मेथी दाने की चाय रोजाना पीने की सलाह दी जाती है, तो वहीं कुछ हेल्थ कंडीशन में इसका रोजाना सेवन सही नहीं माना जाता है। इसलिए मेथी दाने की चाय को रोजाना पीने से पहले डॉक्टर से परामर्श जरूर करनी चाहिए। क्योंकि कई लोगों को इस चाय से एलर्जी होती है।

संक्षिप्त

फश्वर्मूला–1 में रेड बुल के साथ ही बने रहेंगे मैक्स वेरस्टैपेन, कश्वन्ट्रैक्ट साल 2030 तक बढ़ाया

न्यूयॉर्क,एजेंसी। मैक्स वेरस्टैपेन ने अपनी सारी सफलता रेड बुल सीरीज में ही पाई है। उन्होंने 2021 से मिल्टन कीन्स–बेस्ड टीम के साथ चार वर्ल्ड खिताब जीते हैं। उन्होंने 2024 तक लगातार चार खिताब जीते, जिसके बाद 2025 में लैंडो नॉरिस ने उनसे वर्ल्ड टाइटल छीन लिया। फॉर्मूला 1 में अपने भविष्य को लेकर चल रहे शक को दूर करते हुए, चार बार के वर्ल्ड चैंपियन मैक्स वेरस्टैपेन ने अपनी रेड बुल टीम के साथ अनुबंध बढ़ाने पर हस्ताक्षर किया है। वह 2030 के आखिर तक आरबी22 के लिए रेस करेंगे। डचमैन, मैक्स वेरस्टैपेन के मैकलारेन में जाने की चर्चा चल रही थी। रेड बुल ने मैक्स वेरस्टैपेन के साथ अनुबंध बढ़ाने की घोषणा की पुष्टि की। टीम ने इस बात पर जोर दिया कि वेरस्टैपेन के साथ उनकी पार्टनरशिप एफ1 इतिहास की सबसे सफल और अहम साझेदारियों में से एक रही है। वेरस्टैपेन के साथ करार का बढ़ाया जाना आपसी भरोसे और महत्वाकांक्षा को दर्शाता है, साथ ही भविष्य को एक साथ आकार देने का एक साझा फैसला है। मैक्स वेरस्टैपेन, रेड बुल के साथ अपना अनुबंध बढ़ाकर खुश हैं। वह 2016 से बुल के साथ हैं। उन्होंने कहा, मैं अनुबंध ा बढ़ने से सच में बहुत खुश हूं। हमारे पास सबसे अच्छे लोग हैं। मैं फिर से शीर्ष पर वापस आने के लिए सभी के साथ मिलकर काम करते रहने के लिए उत्साहित हूं। यह आखिरी लक्ष्य है जिसके लिए हम सभी काम कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। मैं रेड बुल, लॉरेंट और ओरेकल रेड बुल रेसिंग में सभी को मुझ पर भरोसा दिखाने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। मैक्स वेरस्टैपेन ने अपनी सारी सफलता रेड बुल सीरीज में ही पाई है। उन्होंने 2021 से मिल्टन कीन्स–बेस्ड टीम के साथ चार वर्ल्ड खिताब जीते हैं। उन्होंने 2024 तक लगातार चार खिताब जीते, जिसके बाद 2025 में लैंडो नॉरिस ने उनसे वर्ल्ड टाइटल छीन लिया। डचमैन ने कहा, श्मैंने हमेशा कहा है कि टीम मेरे लिए दूसरे परिवार जैसी है। मुझे घर जैसा महसूस होता है। मैं टीम में रेस जीतने की उम्मीद से आया था। हमने साथ मिलकर जो हासिल किया वह बहुत प्यारा था। हमने कई शानदार पल साझा किए और चार वर्ल्ड चैंपियनशिप जीती। उन्होंने कहा, श्मैं जिस टीम के साथ मैं अपने पूरे करियर में रहा हूं, उसी के साथ इस सफर को जारी रखना वाकई खास है। लॉरेंट मेकीज को जुलाई 2025 में टीम प्रिंसिपल के रोल में प्रमोशन दिया गया। लॉरेंट के साथ अब एक साल से ज्यादा समय से काम करना भी बहुत अच्छा रहा है। मुझे टीम के लिए उनका एक साफ विजन दिखता है। मिल्टन कीन्स में हर कोई उस चीज पर विश्वास करता है जो हम बना रहे हैं, और मैं अगले अध्याय का इंतजार कर रहा हूं। हम इस टीम का भविष्य बनाना जारी रखेंगे। वेरस्टैपेन का एक्सटेंशन टीम के साथ मेकीज के समय की सबसे बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। उन्होंने कहा, मैक्स का हमारे साथ बने रहना और ग्रिड पर सबसे अच्छे ड्राइवर को बनाए रखना रेड बुल, ओरेकल रेड बुल रेसिंग, साथ ही श्एफ1श और पूरे मोटरस्पोर्ट में सभी के लिए शानदार खबर है।

रवि शास्त्री की नकल करते हुए रहाणे ने क्या कहा? वायरल वीडियो ने फैंस को कर दिया लोटपोट

नई दिल्ली,एजेंसी। पूर्व भारतीय क्रिकेटर अजिंक्य रहाणे ने क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद पहली बार अपने मजेदार अंदाज से फैंस का दिल जीत लिया। श्रीलंका और भारत के बीच गॉल में खेले जा रहे पहले टेस्ट के दौरान रहाणे स्टूडियो में कमेंट्री पैनल का हिस्सा थे। इसी दौरान उन्होंने पूर्व भारतीय मुख्य कोच और दिग्गज ऑलराउंडर रवि शास्त्री की ऐसी मिमिक्री की कि स्टूडियो में मौजूद सभी लोग हंस पड़े। रहाणे ने शास्त्री के बोलने के अंदाज, हाव–भाव और जोशीले तेवरों की हूबहू नकल की। उनके साथ पूर्व भारतीय क्रिकेटर अजंय जडेजा और मोहम्मद कैफ भी मौजूद थे। रहाणे ने बताया कि भारतीय टीम के मुख्य कोच रहने के दौरान रवि शास्त्री किस तरह ड्रेसिंग रूम में खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाते थे। उन्होंने शास्त्री के अंदाज में कहा, श्दोस्तों, अब समय आ गया है। समय आ गया है। खेल शुरू हो चुका है। उन्हें दबाव महसूस करने दो। हम दबदबा बनाए हुए हैं। बस मैदान पर जाओ और अपने खेल का आनंद लो। रहाणे ने इस दौरान शास्त्री के चेहरे के हाव–भाव और आवाज के अंदाज को भी कॉपी किया। उनकी यह मिमिक्री सोशल मीडिया पर वायरल हो गई है और फैंस इसे काफी पसंद कर रहे हैं। अजिंक्य रहाणे ने पिछले महीने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट और क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास का ऐलान किया था। उन्होंने भारत के लिए 85 टेस्ट में 5077 रन बनाए, जिसमें 12 शतक और 26 अर्धशतक शामिल रहे। वनडे में उनके नाम 90 मैचों में 2962 रन हैं, जबकि टी20 अंतरराष्ट्रीय में उन्होंने 20 मैचों में 375 रन बनाए। रहाणे का टेस्ट कप्तान के रूप में रिकॉर्ड बेहद शानदार रहा। उनकी कप्तानी में भारत ने चार टेस्ट जीते और दो मुकाबले ड्रॉ रहे। उनकी कप्तानी का सबसे यादगार दौर 2020–21 बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी में आया, जब उन्होंने मेलबर्न में भारत को शानदार वापसी दिलाई और ब्रिस्बेन के गाबा में ऐतिहासिक जीत दर्ज करने वाली टीम का नेतृत्व किया। गाबा की जीत ने ऑस्ट्रेलिया के इस मैदान पर लंबे समय से चले आ रहे अजेय रिकॉर्ड को खत्म किया और भारत ने सीरीज 2–1 से अपने नाम की।

सचिन तेंदुलकर से बेहतर विराट कोहली? एबी डिविलियर्स के बयान ने छेड़ी नई बहस? जानें क्या कहा

केप टाउन,एजेंसी। सचिन तेंदुलकर और विराट कोहली को भारतीय क्रिकेट इतिहास के महानतम बल्लेबाजों में गिना जाता है। दोनों ने घरेलू परिस्थितियों के साथ–साथ इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड जैसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी शानदार प्रदर्शन किया। अब दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान एबी डिविलियर्स ने दोनों की तुलना करते हुए एक ऐसा बयान दिया है, जिसने नई बहस को जन्म दे दिया है। डिविलियर्स ने सचिन की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने सबसे पहले भारतीय उपमहाद्वीप के बल्लेबाजों को यह भरोसा दिया कि उछाल और सीम वाली परिस्थितियों में भी सफलता हासिल की जा सकती है। हालांकि, उनके मुताबिक विराट कोहली ने इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इसे एक अलग स्तर तक पहुंचाया। डिविलियर्स ने अपने यूट्यूब चौनल पर कहा, मैं सचिन तेंदुलकर जैसे खिलाड़ी के बारे में सोचता हूं, जिन्होंने काफी पहले भारत के लिए यह ट्रेंड शुरू किया। हालांकि, वह विराट कोहली जितने मजबूत नहीं थे, जो उनसे भी बेहतर थे। लेकिन सचिन पहले खिलाड़ी थे जिन्होंने दिखाया कि उपमहाद्वीप का बल्लेबाज उछाल और सीम वाली परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकता है। विराट ने इसे आगे बढ़ाया और स्तर को और ऊंचा कर दिया। डिविलियर्स के मुताबिक विदेशी परिस्थितियों में कोहली और सचिन की सफलता का असर मौजूदा भारतीय बल्लेबाजों पर भी पड़ा है। उन्होंने कहा कि दोनों दिग्गजों ने आने वाली पीढ़ी के खिलाड़ियों को विदेशों में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। डिविलियर्स ने कहा, इसी वजह से अब कई खिलाड़ी हैं, जैसे केएल राहुल और देवदत्त पडिक्कल, जिन्होंने इस ट्रेंड को आगे बढ़ाना शुरू किया है और विराट तथा सचिन के नक्शेकदम पर चल रहे हैं।

कोहली की विदेशी परिस्थितियों में बल्लेबाजी की खासियत उनकी तकनीक, फिटनेस और तेज गेंदबाजों के खिलाफ आक्रामक रवैये को माना जाता रहा है। उन्होंने कई विदेशी दौरों पर भारत के लिए अहम पारियां खेलीं और टेस्ट क्रिकेट में टीम को एक मजबूत विदेशी इकाई बनाने में योगदान दिया। डिविलियर्स ने केएल राहुल की तकनीक की तारीफ की, लेकिन साथ ही कहा कि विदेशी परिस्थितियों में उनसे और बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद की जाती है। उन्होंने बताया कि राहुल का विदेशों में टेस्ट औसत करीब 34 है, जो उनकी क्षमता के मुकाबले कम है। डिविलियर्स ने कहा, श्केएल एक ऐसे खिलाड़ी हैं जिनकी तकनीक बहुत अच्छी है और वह भारतीय लाइनअप के लिए बड़ी संपत्ति हैं। लेकिन विदेशों में उनका औसत केवल 34 है। इसलिए आप उनसे ज्यादा की उम्मीद करेंगे और यह एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर उन्हें काम करना होगा। उन्होंने राहुल को बड़ी पारियों को और बड़ा बनाने की सलाह भी दी। डिविलियर्स ने कहा, जब वह क्रीज पर जम जाएं तो उन्हें बड़े स्कोर बनाने होंगे। सिर्फ शतक बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे 180 तक ले जाना होगा। क्योंकि पहली गेंद पर शून्य और नई गेंद से आउट होने का खतरा हमेशा बना रहता है। इसलिए उनके लिए सबसे जरूरी बात यही होगी कि बड़े स्कोर को और बड़ा बनाया जाए।

सचिन ने 2013 में संन्यास लिया था। 200 टेस्ट मैचों में उनके नाम 15,921 रन हैं, जो टेस्ट क्रिकेट का रिकॉर्ड है। तेंदुलकर के टेस्ट रनों में से लगभग 55 प्रतिशत (8705 रन) घर से बाहर आए। वह विदेशी हालात में टेस्ट क्रिकेट में बल्लेबाजों में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी भी हैं। वहीं, विराट कोहली ने 123 टेस्ट में 9,230 रन बनाए हैं। इस दौरान कोहली ने भारत के बाहर 66 टेस्ट में 4,774 रन बनाए। विराट ने 2025 में टेस्ट को अलविदा कह दिया था। सचिन ने सेना देशों (दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया) में 63 टेस्ट मैचों में 51.30 के एवरेज से 5,387 रन बनाए, जिसमें 17 सेंचुरी और 23 फिफ्टी शामिल हैं, जबकि कोहली ने 46 टेस्ट मैचों में 42.08 के औसत से 3,661 रन बनाए, जिसमें 12 सेंचुरी और 14 फिफ्टी शामिल हैं। आंकड़ों के मुताबिक, सचिन विदेशों में ज्यादा सफल हैं। डिविलियर्स ने कोहली के असर की बात कही है, जिसके मुताबिक भारत के घर से बाहर एक मजबूत टेस्ट टीम के तौर पर उभरने में कोहली के अहम योगदान का जिक्र है।

कनाडा टीम पर मैच फिक्सिंग के आरोपों के बीच हेड कोच का इस्तीफा! क्या है वजह? जानें मामला

नई दिल्ली,एजेंसी। कनाडा पुरुष क्रिकेट टीम के मुख्य कोच मोंटी देसाई ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्हें एक मई 2026 को दूसरी बार टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया गया था। हालांकि, उनका दूसरा कार्यकाल ज्यादा लंबा नहीं चला और उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए पद छोड़ने की घोषणा कर दी। मोंटी ने यह फैसला तब लिया है, जब कनाडा टीम पर मैच फिक्सिंग के गंभीर आरोप लगे हैं। देसाई ने अपने पोस्ट में इस कार्यकाल को छोटा लेकिन महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने लिखा, एक छोटा अध्याय, लेकिन एक अर्थपूर्ण अध्याय। हर माहौल आपको कुछ न कुछ सिखाता है। इस अनुभव ने मेरे इस विश्वास को और मजबूत किया कि टिकाऊ प्रदर्शन समय, भरोसे, तैयारी, मजबूत रिश्तों और मिलकर काम करने से बनता है। उन्होंने खिलाड़ियों और सपोर्ट स्टाफ का भी आभार जताया। देसाई ने लिखा, शखिलाड़ियों, सपोर्ट स्टाफ और इस सफर में साथ देने वाले सभी लोगों का शुक्रिया। मैं बने रिश्तों, सीखे गए सबक और योगदान देने के मौके के लिए शुक्रगुजार हूं।

कनाडाई क्रिकेट में मैच फिक्सिंग को लेकर गंभीर आरोप सामने आए हैं। मामला उस समय चर्चा में आया जब सीबीसी की डॉक्यूमेंट्री में कनाडाई क्रिकेट में संगठित अपराध के कथित दखल और मैचों और टीम चयन को प्रभावित करने के आरोप लगाए गए। मामले में लॉरेंस बिश्नोई गैंग का नाम भी सामने आया है। आरोप है कि खिलाड़ियों और टीम से जुड़े लोगों पर कथित तौर पर धमकियों के जरिए दबाव बनाया गया। आईसीसी की एंटी–करप्शन यूनिट (।ब्) ने 2026 पुरुष टी20 विश्व कप में कनाडा और न्यूजीलैंड के बीच हुए ग्रुप स्टेज मुकाबले को लेकर जांच शुरू की। खास तौर पर कनाडा के 22 वर्षीय कप्तान दिलप्रीत बजवा के एक ओवर को लेकर सवाल उठे। न्यूजीलैंड की पारी के दौरान बजवा ने पांचवां ओवर डाला। उन्होंने ओवर की शुरुआत नो–बॉल से की और इस दौरान न्यूजीलैंड ने बड़ी संख्या में रन बनाए। इस असामान्य घटनाक्रम ने दर्शकों और जांचकर्ताओं का ध्यान खींचा। हालांकि, इन घटनाओं को मैच फिक्सिंग का साबित मामला मानना सही नहीं होगा। जांच में आरोपों की पुष्टि होना अभी अलग विषय है। पूरे विवाद में कनाडाई क्रिकेट के प्रशासन और भ्रष्टाचार–रोधी व्यवस्था पर भी गंभीर सवाल उठे हैं। मोंटी देसाई के दूसरे कार्यकाल में कनाडा ने आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप लीग–2 की दो ट्राई–सीरीज में हिस्सा लिया। इनमें से एक सीरीज कनाडा में जबकि दूसरी स्कॉटलैंड में खेली गई। कनाडा के विश्व कप अभियान में अभी चार मुकाबले बाकी हैं।

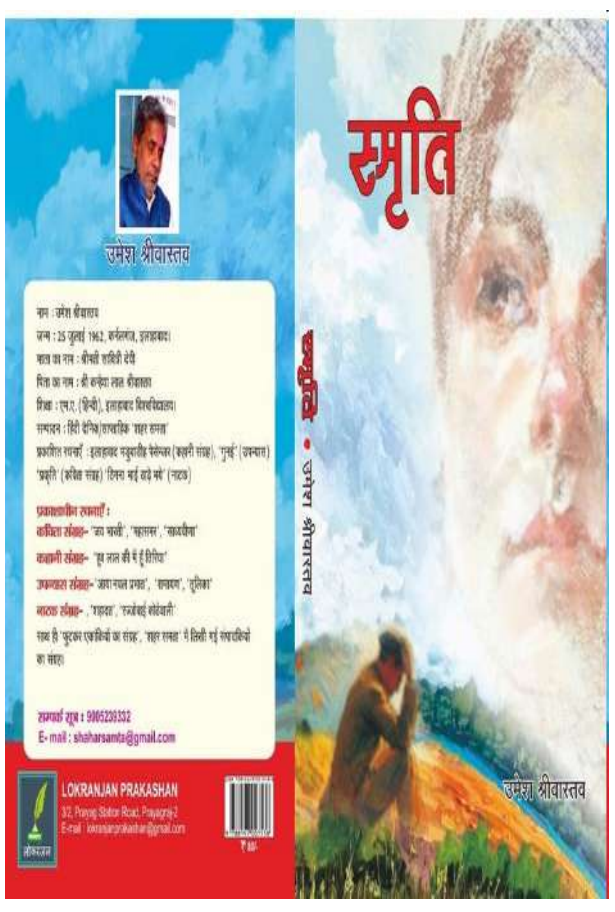

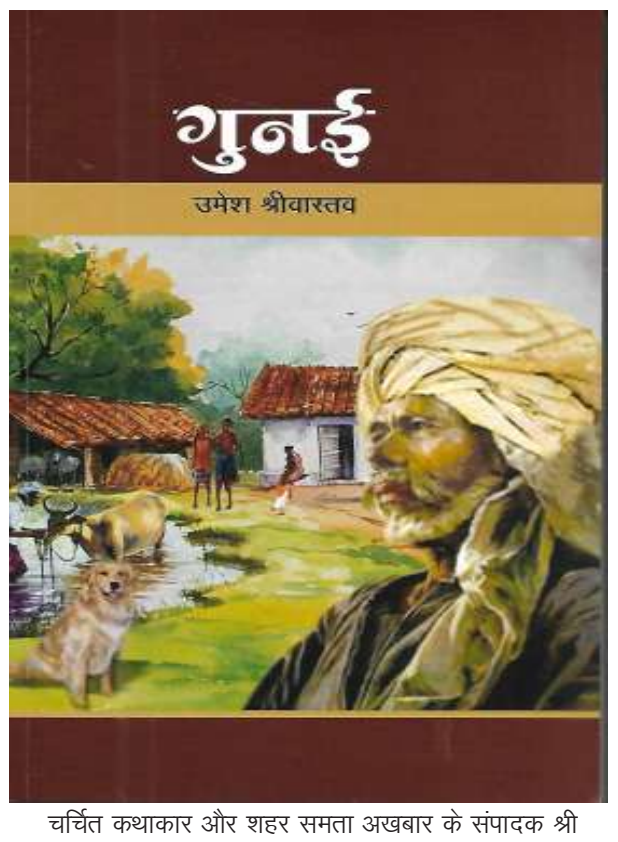

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

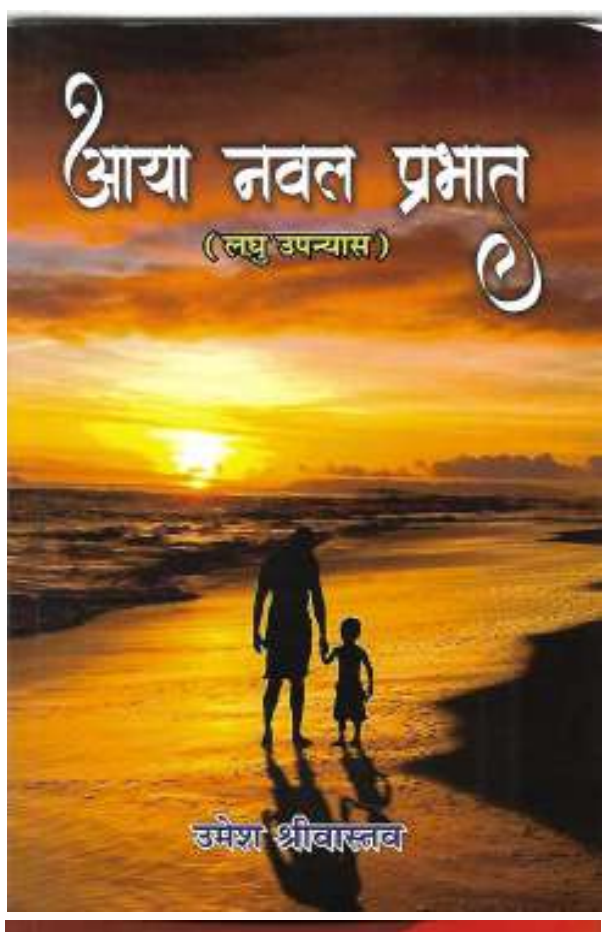

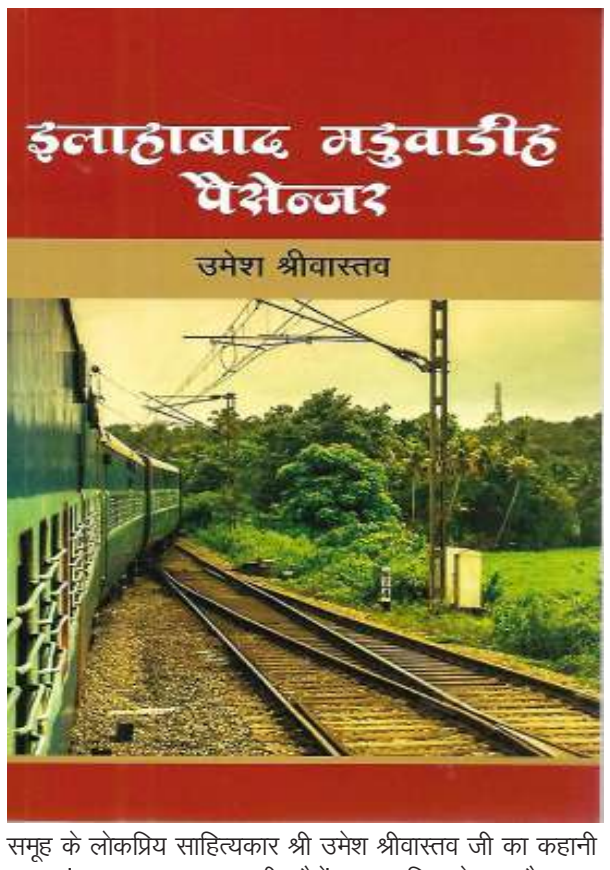

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

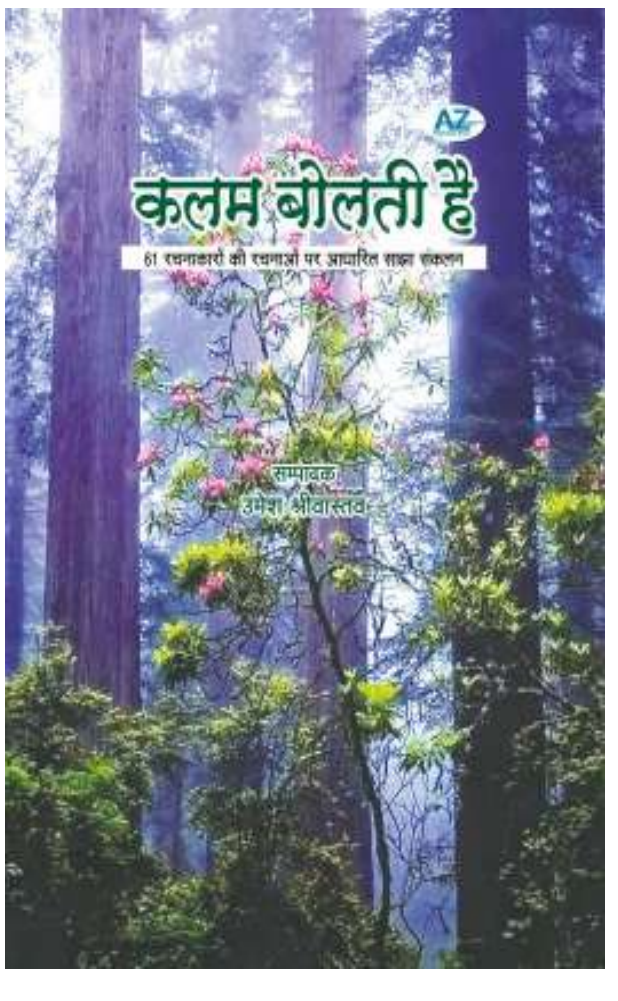

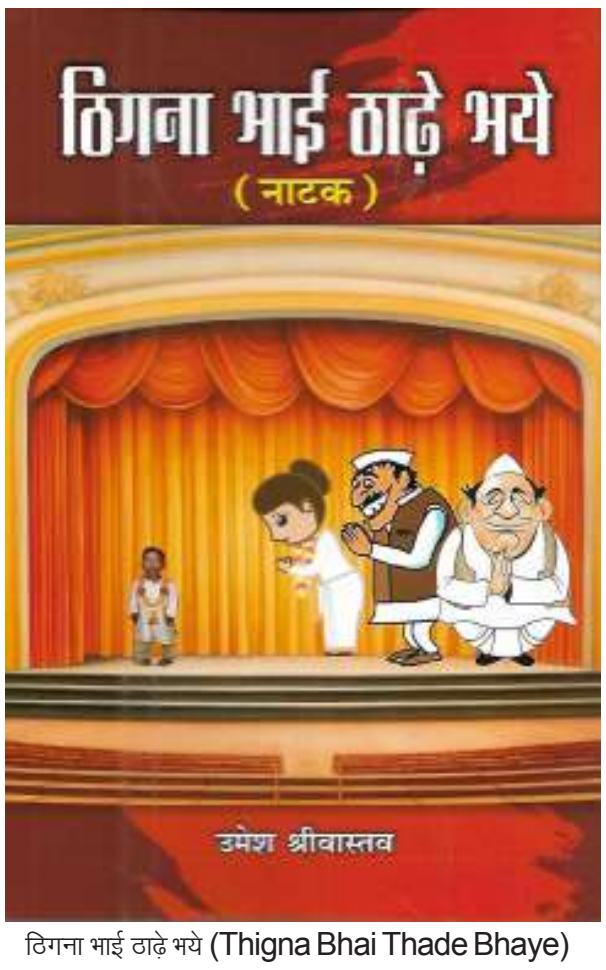

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

कीव पर रूस का एक और बड़ा हमला, मिसाइल हमले में 12 की मौत, 30 से ज्यादा घायल

पीटीआई, कीव, एजेंसी। रूसी मिसाइल हमले में कीव में कम से कम 12 लोग की मौत हुई है। रात भर राजधानी में विस्फोटों की आवाजें गूंजती रहीं। यह जानकारी स्थानीय अधिकारियों ने दी। यूक्रेन की आपातकालीन सेवा के अनुसार, इस

हमले में कम से कम 33 लोग घायल हुए। गुरुवार तड़के तक हवाई हमले का अलर्ट जारी रहा। कितने जिले प्रभावित हुए? कीव के डार्नीत्स्की, स्वियातोशिन्स्की और सोलोमियांस्की जिलों में हुए हमलों में 12 स्थान प्रभावित हुए, जिससे आवासीय भवन, एक चिकित्सा केंद्र और एक शैक्षणिक संस्थान क्षतिग्रस्त हो गए। आपातकालीन दल ने मलबे के नीचे फंसे लोगों को बाहर निकाला। ट्रंप ने अपना कौन सा निर्णय पलट दिया? रूस ने कीव की हवाई रक्षा प्रणालियों को सीमित करने के लिए राजधानी पर मिसाइल हमलों को तेज कर दिया है। कीव के पास मिसाइल हमलों को रोकने में सक्षम सीमित प्रणालियां हैं, जबकि उसकी अमेरिकी निर्मित पैट्रियट हवाई रक्षा प्रणालियों के लिए मिसाइलों की आपूर्ति लगातार सीमित बनी हुई है।अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यूक्रेन को पैट्रियट वायु रक्षा प्रणालियों के उत्पादन के लिए लाइसेंस देने की अनुमति दी थी, लेकिन बाद में उन्होंने उस निर्णय को पलट दिया। यूक्रेन ने भी हमले तेज क्यों किए? इस बीच, यूक्रेन ने रूसी क्षेत्र के अंदरूनी हिस्सों में स्थित हथियार डिपो, सैन्य सुविधाओं और अन्य रणनीतिक लक्ष्यों के खिलाफ लंबी दूरी के हमलों के अपने अभियान को तेज कर दिया है, जिसका उद्देश्य यूक्रेनी शहरों पर अपने हमलों को जारी रखने की मॉस्को की क्षमता को कमजोर करना है।सोलोमियांस्की जिले में, नौ मंजिला आवासीय इमारत की ऊपरी दो मंजिलें नष्ट हो गईं। अन्य मंजिलों में आग लग गई। दो आवासीय इमारतों और एक स्कूल आश्रय स्थल में भी लोग फंसे हुए थे। 60 वर्षीय लारिसा बोंडारुक जमीन पर बैठी थीं और अपनी बिल्ली, चौनेल को पकड़े हुए थीं, जिसे दमकलकर्मियों ने बचाया था। आंखों में आंसू लिए उसने बताया कि उसके पड़ोसी का पोता मलबे के नीचे दबकर मर गया। उसका अपार्टमेंट बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। उन्होंने कहा, एक रॉकेट छत से टकराया। आवाज इतनी तेज थी कि देखते ही देखते मलबा और दरवाजे उड़ गए। चारों ओर धुएं के गुबार उठ रहे थे, आग की लपटें उठ रही थीं, चीख–पुकार मची थी और चारों ओर निराशा का माहौल था।

विदेशों का नया ट्रेंड भारत की पुरानी जीवनशैली है? ब्रिटेन-अमेरिका के जेन-जी अपना रहे भारतीय साइलेंट वॉक

लंदन, एजेंसी। अमेरिका और ब्रिटेन समेत पश्चिमी देशों में जेन–जी के बीच इन दिनों साइलेंट वॉकिंग तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इसमें युवा मोबाइल फोन को दूर रखकर, ईयरफोन

उतारकर और बिना संगीत या पॉडकास्ट सुने चुपचाप टहलते हैं। सोशल मीडिया पर इसे तनाव कम करने और मानसिक सुकून पाने के तरीके के रूप में पेश किया जा रहा है। हालांकि भारतीयों के लिए यह तरीका उतना नया नहीं है, क्योंकि यहां मौन और एकांत में टहलने की परंपरा लंबे समय से चली आ रही है। क्या है साइलेंट वॉकिंग और युवा इसे क्यों अपना रहे हैं? साइलेंट वॉकिंग का मतलब बिना किसी डिजिटल गतिविधि के पैदल चलना है। इस दौरान मोबाइल, संगीत, पॉडकास्ट, ऑडियोबुक और सोशल मीडिया से दूरी बनाई जाती है। व्यक्ति केवल अपने कदमों, विचारों और आसपास के वातावरण पर ध्यान देता है। लगातार फोन और इंटरनेट से जुड़े रहने वाली युवा पीढ़ी के लिए यह तरीका कुछ समय के लिए डिजिटल दुनिया से दूरी बनाने का अवसर देता है। इसे तनाव कम करने और मन को शांत करने के एक आसान तरीके के रूप में देखा जा रहा है। क्या भारत में यह परंपरा पहले से मौजूद है?

भारत में मौन और एकांत को मानसिक शांति से जोड़ने की परंपरा सदियों पुरानी है। मंदिरों की परिक्रमा, मौन व्रत और विपश्यना जैसे अभ्यासों में बाहरी शोर से दूरी बनाकर आत्मचिंतन पर जोर दिया जाता है। मंदिर परिसरों और पार्कों में चुपचाप टहलना भी भारतीय जीवनशैली का हिस्सा रहा है। इसलिए पश्चिमी देशों में साइलेंट वॉकिंग का बढ़ता चलन भारतीय नजरिए से किसी बिल्कुल नई चीज के बजाय पुरानी परंपरा के आधुनिक रूप जैसा दिखाई देता है। क्या भारतीय युवा भी इसे अपना रहे हैं? भारत में भी युवा बिना ईयरफोन और मोबाइल में व्यस्त हुए सार्वजनिक जगहों पर टहलते नजर आ रहे हैं। दिल्ली का लोधी गार्डन, बंगलूरु का कब्बन पार्क और मुंबई का मरीन ड्राइव ऐसे स्थान हैं, जहां लोग चहलकदमी करते हैं। हालांकि भारत में इसे हमेशा साइलेंट वॉकिंग के नाम से नहीं जाना जाता।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227

बांग्लादेश में 35 साल बाद राष्ट्रपति चुनाव आज: किसका किससे है मुकाबला, कौन दौड़ में सबसे आगे? जानिए समीकरण

ढाका,एजेंसी। बांग्लादेश में आज नए राष्ट्रपति का चुनाव होने वाला है। सत्तारूढ़ बीएनपी के बड़े नेता मिर्जा फखरुल इस्लाम आलमगीर इस चुनाव में सबसे आगे माने जा रहे हैं। यह बांग्लादेश में 35 साल बाद पहला राष्ट्रपति चुनाव है, जिसमें मुकाबला हो रहा है। सांसदों के सामने आलमगीर और सेवानिवृत्त कर्नल ओली अहमद के बीच चुनाव होगा। ओली अहमद 11 दलों के विपक्षी गठबंधन के उम्मीदवार हैं। चुनाव आयोग के मुताबिक, मतदान संसद यानी जातीय संसद में दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक होगा। आलमगीर (78 वर्षीय) सत्तारूढ़ बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के उम्मीदवार हैं। वहीं, अहमद (84 वर्षीय)लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) के अध्यक्ष हैं। वह जमात– ए–इस्लामी के नेतृत्व वाले गठबंधन के उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ रहे हैं। निर्वाचन आयोग ने 16 अगस्त को दोनों

उम्मीदवारों के नामांकन पत्रों को सही मानते हुए मंजूर कर लिया था। बांग्लादेश में 1991 के बाद यह पहला राष्ट्रपति चुनाव है, जिसमें उम्मीदवारों के बीच मुकाबला हो रहा है। पिछले कई दशकों में राष्ट्रपति का चुनाव आमतौर पर आपसी सहमति से या बिना मुकाबले के होता रहा है। आलमगीर ने सांसदों से वोट देने की अपील की बीएनपी की संसदीय दल की बैठक में बुधवार को आलमगीर ने पार्टी के सांसदों से राष्ट्रपति चुनाव में उन्हें वोट देने की अपील की। उन्होंने कहा, अगर मैंने कोई गलती की है या अनजाने में किसी को दुख पहुंचाया है, तो मैं माफी मांगता हूं। आलमगीर बीएनपी में संयुक्त महासचिव, कार्यवाहक महासचिव और महासचिव जैसे पदों पर रह चुके हैं। बैठक में मौजूद कई सांसदों ने बताया कि वरिष्ठ नेता भावुक हो गए और कई बार उनकी आंखों से आंसू निकल आए। आलमगीर ने वादा किया कि वह देश की आजादी और संप्रभुता से कभी समझौता नहीं करेंगे। कब शपथ लेंगे नए राष्ट्रपति? डेली स्टार अखबार ने संसद सचिवालय के सूत्रों के हवाले से बताया कि राष्ट्रपति चुनाव जीतने वाले उम्मीदवार शुक्रवार शाम बंगभवन के दरबार हॉल में बांग्लादेश के नए राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेंगे। यह राष्ट्रपति चुनाव इसलिए जरूरी हुआ, क्योंकि पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के करीबी माने जाने वाले मोहम्मद शहाबुद्दीन ने पिछले महीने स्वास्थ्य कारणों से इस्तीफा दे दिया था। उनका पांच साल का कार्यकाल अभी पूरा नहीं हुआ था। संविधान में राष्ट्रपति चुनाव को लेकर क्या नियम है? प्रधानमंत्री और बीएनपी के अध्यक्ष तारिक रहमान ने लंबे समय तक पार्टी के महासचिव रहे और पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के करीबी सहयोगी आलमगीर को राष्ट्रपति पद के लिए पार्टी का उम्मीदवार बनाया है। संविधान के मुताबिक, राष्ट्रपति का पद खाली होने के 90 दिनों के अंदर नया राष्ट्रपति चुना जाना जरूरी है। राष्ट्रपति का पद खाली होने के बाद संविधान के नियम के अनुसार संसद के अध्यक्ष हाफिज उद्दीन अहमद फिलहाल कार्यवाहक राष्ट्रपति के तौर पर काम कर रहे हैं। संविधान के मुताबिक, राष्ट्रपति का चुनाव संसद करती है। बीएनपी के पास दो–तिहाई बहुमत? 12 फरवरी को हुए चुनाव में बीएनपी सत्ता में आई थी। अभी संसद में उसके पास दो–तिहाई बहुमत है। ऐसे में आलमगीर के राष्ट्रपति बनने की संभावना काफी मजबूत है। अगर आलमगीर चुनाव जीतते हैं, तो वह बांग्लादेश के 23वें राष्ट्रपति बनेंगे। वह दो दशक से ज्यादा समय से बीएनपी के सबसे प्रमुख नेताओं में शामिल रहे हैं। उन्होंने 2011 से पार्टी के कार्यवाहक महासचिव के तौर पर काम किया। इसके बाद 2016 में वह औपचारिक रूप से महासचिव बने। उन्होंने उस समय बीएनपी का नेतृत्व करने में अहम भूमिका निभाई, जब पार्टी की तत्कालीन अध्यक्ष और पूर्व प्रधानमंत्री जिया जेल में थीं और रहमान विदेश में थे। राष्ट्रपति की शक्तियां कितनी हैं? बांग्लादेश की संसदीय व्यवस्था में राष्ट्रपति मुख्य रूप से नाममात्र के राष्ट्राध्यक्ष होते हैं। हालांकि, उनके पास संविधान के तहत कुछ अहम अधिकार हैं। इनमें प्रधानमंत्री और मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति करना शामिल है। राष्ट्रपति देश की सशस्त्र सेनाओं के सर्वोच्च कमांडर भी होते हैं। हालांकि, इन शक्तियों का इस्तेमाल आम तौर पर प्रधानमंत्री की सलाह पर किया जाता है।

आलमगीर ने अर्थशास्त्र की पढ़ाई की है। उन्होंने राजनीति में कदम वामपंथी विचारों वाले छात्र नेता के तौर पर रखा था। उस समय बांग्लादेश को पूर्वी पाकिस्तान कहा जाता था। भारत की मदद से 1971 में बांग्लादेश पाकिस्तान से आजाद हुआ था। 90 के दशक की शुरुआत में बीएनपी में शामिल होने के बाद आलमगीर ने कृषि और विमानन राज्य मंत्री के तौर पर काम किया। 12 फरवरी के चुनाव के बाद 17 फरवरी 2026 को नई सरकार बनने पर मिर्जा फखरुल इस्लाम आलमगीर को प्रांतीय सरकार में ग्रामीण विकास और सहकारिता मंत्री बनाया गया।

'ईरान पर होगी सबसे बड़ी आर्थिक कार्रवाई': ट्रंप ने दी धमकी, मदद करने वाले देशों को चेताया, क्या बढ़ेगा तनाव?

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के खिलाफ अब तक की सबसे सख्त आर्थिक कार्रवाई की धमकी दी। उन्होंने कहा कि ईरान को अमेरिका के साथ समझौता करने का सबसे बड़ा मौका दिया गया था। लेकिन उसने इसे गंवा दिया। ट्रंप ने कहा, इस्लामी गणराज्य ईरान को किसी समझौते के लिए मुझसे ज्यादा बड़ा मौका किसी ने नहीं दिया। दुख की बात है कि उन्होंने इस मौके का फायदा नहीं उठाया। इसलिए आज मैं किसी भी देश के खिलाफ अब तक की सबसे कड़ी आर्थिक कार्रवाई की घोषणा कर रहा हूं। उन्होंने दावा किया कि ईरान की नौसेना खत्म हो चुकी है। उसकी वायु सेना नष्ट हो गई है। उसकी सैन्य फैक्टरियां मलबे में बदल गई हैं। ईरान की मुद्रा बेकार हो गई है और देश बेहद कमजोर स्थिति में है। ट्रंप ने कहा कि जो भी देश ईरान को किसी भी तरह की आर्थिक मदद देगा, उसे भी बड़े आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ेगा। इसमें वित्तीय संस्थान, कारोबार, हवाई अड्डे और सरकारी संस्थाएं शामिल हैं। उन्होंने तेल की तस्करी, स्वैप लाइन, नकद लेनदेन,

एक्सचेंज हाउस, जहाजों के पंजीकरण और ईरान की मदद करने वाली छिपी हुई (शेल) कंपनियों को तुरंत रोकने की बात कही। सहयोगी देशों से अमेरिका के साथ आने की अपील ट्रंप ने इसे ईरान के खिलाफ बड़े आर्थिक हमले का दिन बताया। उन्होंने अमेरिका के सहयोगी देशों से ईरान को अलग–थलग करने और उसके खतरे को खत्म करने में साथ देने की अपील की। उन्होंने कहा कि ईरान इस समय बेहद कमजोर स्थिति में है। उन्होंने दावा किया कि ये ऐतिहासिक कदम ईरान को और दुनियाभर में आतंक फैलाने की उसकी क्षमता को बुरी तरह कमजोर कर देंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, ईरान के पास कभी परमाणु हथियार नहीं होगा। अमेरिका ने ईरान पर आर्थिक दबाव बढ़ाया अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट के पिछले हफ्ते इसी तरह बयान दिया था। बेसेंट ने कहा था कि अमेरिका ईरान को आर्थिक रूप से अलग–थलग करने की कोशिशें बढ़ाएगा। इस रणनीति में अमेरिकी नौसैनिक नाकाबंदी भी शामिल है। अमेरिकी वित्त मंत्रालय ऑपरेशन इकोनॉमिक फ्यूरी नाम से प्रतिबंध अभियान भी चला रहा है। इसका मकसद लक्षित कार्रवाई के जरिये ईरान के पैसे जुटाने के स्रोतों को बंद करना है। युद्ध की शुरुआत 28 फरवरी को ईरान पर अमेरिका और इस्राइल के हमलों के साथ हुई। इसके जवाब में ईरान ने खाड़ी क्षेत्र में अमेरिकी ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन से हमले किए। रिपोर्ट के मुताबिक, रूस ने ईरान को सैन्य उपकरण और ड्रोन से जुड़ी तकनीक दी है। वहीं, चीन लगातार ईरान से तेल खरीद रहा है। चीन ने ईरान के साथ कारोबारी रिश्ते बनाए रखे हैं और उसे कूटनीतिक समर्थन भी दिया है। पाकिस्तान ने कूटनीति और बातचीत शुरू कराने की कोशिशों के जरिये ईरान का समर्थन किया है। हालांकि, उसने ईरान को सैन्य मदद नहीं दी है। रॉयटर्स के मुताबिक, ईरान को उसके सहयोगी हथियारबंद समूहों का भी समर्थन हासिल है। इनमें यमन के हूती और इराक में ईरान के साथ जुड़े लड़ाके शामिल हैं। ट्रंप ने इससे पहले कहा था कि अमेरिका के पास ईरान के खिलाफ सख्त कड़े प्रतिबंध लगाने के विकल्प मौजूद हैं। होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर ट्रंप ने दावा किया, अभी जलडमरूमध्य खुला है। बहुत सारी नावें वहां से गुजर रही हैं। भारत पर इसका असर तेल और गैस की कीमतों, नौवहन और महंगाई के रूप में पड़ सकता है, क्योंकि होर्मुज में तनाव बढ़ने से भारत की ऊर्जा आपूर्ति प्रभावित हो सकती है। साथ ही ईरान पर अमेरिकी दबाव बढ़ने से भारत के चाबहार बंदरगाह से जुड़ी योजनाओं पर भी असर पड़ने का खतरा है। चाबहार भारत के लिए ईरान के रास्ते अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुंच का अहम रास्ता है, लेकिन अमेरिकी प्रतिबंध और मौजूदा संघर्ष पहले ही इसके कामकाज पर दबाव डाल रहे हैं।

अमेरिका में RSS पर बैन लगाने की मांग: भागवत के US दौरे पर USCIRF सख्त, बोला- संघ नेताओं को न मिले सम्मान

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की धार्मिक स्वतंत्रता पर काम करने वाली सलाहकार संस्था यूएस कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलिजियस फ्रीडम (यूएससीआईआरएफ) के अधिकारियों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। साथ ही, उन्होंने अमेरिकी सरकार से अपील की है कि वह आरएसएस नेताओं को राजनयिक सम्मान न दे और न ही उनके (एकता का उत्सव) में शामिल होने वाले हैं। यूएससीआईआरएफ कमिश्नर जीन मिल्स ने कहा कि आरएसएस नेताओं को, भले ही वे भारत सरकार से जुड़े हों, हाई–लेवल मीटिंग या राजनयिक सम्मान नहीं दिया जाना चाहिए। इसके बजाय, अमेरिकी सरकार (ल्ठ) को उन आरएसएस सदस्यों पर प्रतिबंध लगाने पर ध्यान देना चाहिए, जो फ्रीडम ऑफ रिलिजन और बिलीफ यानी धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन के लिए जिम्मेदार पाए गए हैं। यूएससीआईआरएफ ने आसिफ महमूद और जीन मिल्स की इन टिप्पणियों को अपने एक्स अकाउंट पर पोस्ट किया है। महमूद ने कहा, श्भारत के प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सदस्य हैं। यह भारत का एक मुख्य संगठन है, जिसके सहयोगी समूहों ने ईसाइयों और मुसलमानों सहित धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हमले किए हैं। अब आरएसएस नेता मोहन भागवत अमेरिका का दौरा करने वाले हैं।

साथ किसी तरह की हाई–लेवल मीटिंग करे। यह बयान आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के प्रस्तावित अमेरिका दौरे से पहले आया है। वहीं, भारत पहले ही यूएससीआईआरएफ की रिपोर्टों को पक्षपातपूर्ण और वैचारिक पूर्वाग्रह पर आधारित बताते हुए खारिज कर चुका है। यूएससीआईआरएफ के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल पर इसके चेयरमैन आसिफ महमूद के हवाले से कहा गया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सदस्य हैं। उन्होंने आरएसएस को एक श्छत्रेला ऑर्गनाइजेशनश यानी ऐसा मुख्य संगठन बताया, जिसके सहयोगी संगठनों पर धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हमले करने के आरोप लगते रहे हैं। महमूद की ये टिप्पणियां आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के अमेरिका दौरे से कुछ हफ्ते पहले सामने आई हैं। भागवत 29 अगस्त को न्यूयॉर्क में श्अमेरिका हिंदूज फॉर एंगेजमेंट एंड डायलॉगश की ओर से आयोजित श्यूनिवर्सल वननेस सेलिब्रेशनश एडवोकेसी ग्रुप श्हिंदूज फॉर ह्यूमन राइट्सश ने कहा कि मोहन भागवत के दौरे को मुसलमानों और ईसाइयों के खिलाफ आरएसएस नेटवर्क से जुड़े हिंसा के आरोपों से अलग करके नहीं देखा जा सकता। इस एडवोकेसी ग्रुप ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि श्एकता का उत्सव धार्मिक श्रेष्ठता की राजनीति को छिपा नहीं सकता। मार्च में यूएससीआईआरएफ की सालाना रिपोर्ट में धार्मिक स्वतंत्रता के कथित उल्लंघन को लेकर भारत की आलोचना की गई थी। रिपोर्ट में आरएसएस और रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (त्ॅ) सहित कुछ व्यक्तियों और संस्थाओं पर टारगेटेड प्रतिबंध लगाने का समर्थन किया गया था। यूएससीआईआरएफ ने इन्हें धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन के लिए जिम्मेदार ठहराया था। भारत ने यूएससीआईआरएफ की रिपोर्ट को खारिज कर दिया था। भारत का कहना है कि यह संस्था लगातार देश की गलत और चुनिंदा तस्वीर पेश करती है।

नताली हार्प बनीं ट्रंप की सबसे भरोसेमंद साथी, कैमरे से दूर रहकर कैसे बढ़ा व्हाइट हाउस में असर?

न्यूयॉर्क, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आसपास कई ताकतवर लोग हैं, लेकिन 35 वर्षीय नताली हार्प की भूमिका अलग नजर आती है। वह कैमरे के सामने बोलने वाली अधिकारी नहीं हैं, फिर भी ट्रंप के आसपास लगातार दिखाई देती हैं। ओवल ऑफिस से लेकर मरीन वन तक वह राष्ट्रपति के साथ रहती हैं। खास तौर पर प्रेस सचिव रहीं कैरोलिन लेविट की विदाई के बाद व्हाइट हाउस में हार्प की अहमियत और बढ़ने की बात सामने आई है। नताली हार्प को ह्यूमन प्रिंटर क्यों कहा जाता है? हार्प ट्रंप के लिए लगातार जानकारी जुटाने, विश्व नेताओं से संदेशों के आदान–प्रदान और सोशल मीडिया पोस्ट तैयार करने में मदद करती हैं। वह देर रात तक राष्ट्रपति के साथ काम करती हैं और रविवार को भी छुट्टी नहीं लेने की बात सामने आई है। उनके पास एक पोर्टेबल प्रिंटर भी रहता है। इसी वजह से व्हाइट हाउस में उन्हें 'ह्यूमन प्रिंटर' कहा जाता है। वह ट्रंप तक सोशल मीडिया और बाहरी दुनिया की जानकारी तुरंत पहुंचाने में अहम भूमिका निभाती हैं। ट्रंप के साथ खतरनाक सफर में भी क्यों रहीं? नताली की भूमिका उस समय भी चर्चा में आई जब वह एक बेहद गुप्त अभियान का हिस्सा बनीं। इस अभियान में हमले के खतरे के बीच ट्रंप और कुछ चुनिंदा लोगों को तुर्किये से सुरक्षित निकालने की कोशिश की गई थी। इसके लिए विमान के कैटरिंग कंटेनर का इस्तेमाल किया गया था। इस घटना के बाद हार्प की भूमिका ज्यादा लोगों की नजर में आई। ट्रंप के करीबी सहयोगियों के अनुसार, राष्ट्रपति के प्रति उनकी निष्ठा बेहद मजबूत है। हार्प की ट्रंप से नजदीकी का एक निजी कारण भी बताया जाता है। वह कैंसर से जूझ चुकी हैं। उनके अनुसार, ट्रंप की ओर से समर्थित 'राइट टू ट्राई' कानून ने उन्हें प्रयोगात्मक इलाज तक पहुंच दिलाने में मदद की और इससे उनकी जिंदगी बचाने में मदद मिली। ट्रंप भी कई बार कह चुके हैं कि दूसरे कर्मचारी भविष्य में उनका साथ छोड़ सकते हैं, लेकिन नताली ऐसा नहीं करेंगी। यही निजी अनुभव दोनों के बीच भरोसे की एक वजह माना जाता है। हाल ही में सामने आए पत्रों में नताली ने ट्रंप के प्रति अपनी बेहद गहरी निष्ठा जाहिर की थी। इनमें उन्होंने स्वीकार किया कि ट्रंप के साथ काम करते समय वह खाना–पीना और सोना तक भूल जाती थीं। मई 2023 में स्कॉटलैंड दौरे के दौरान ट्रंप को लिखे एक पत्र में उन्होंने दोनों के बीच सब कुछ हमेशा सही रहने की इच्छा जताई थी। हालांकि, दोनों के बीच किसी प्रेम संबंध की पुष्टि नहीं हुई है। नताली हार्प की ताकत किसी सार्वजनिक पद या कैमरे के सामने दिए जाने वाले बयानों से ज्यादा ट्रंप तक सीधे पहुंच में दिखाई देती है।

सरकारी मदद लेने वालों का ग्रीन कार्ड आवेदन हो सकता है खारिज, क्या भारतीय प्रवासियों की बढ़ेगी मुश्किल?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में स्थायी नागरिकता यानी ग्रीन कार्ड पाने की कोशिश कर रहे प्रवासियों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। ट्रंप प्रशासन ने सार्वजनिक बोझ से जुड़े नियमों का दायरा बढ़ा दिया है। नए नियम के तहत सरकारी आर्थिक मदद लेने वाले कुछ प्रवासियों के ग्रीन कार्ड आवेदन पर सवाल उठ सकते हैं और आवेदन खारिज भी किया जा सकता है।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।